



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY  
भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1  
प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 259]  
No. 259]

नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 27, 2005/आश्विन 5, 1927  
NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 27, 2005/ASVINA 5, 1927

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय  
(वाणिज्य विभाग)  
(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)  
अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 सितम्बर, 2005  
निर्णायक समीक्षा—अंतिम जांच परिणाम

**विषय:-** यूएस, ईयू, चेक गणराज्य और कोरिया गणराज्य के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सोडियम साइनाइड के आयातों पर लगाए गए निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा।

**क. पृष्ठ भूमि एवं जाँच शुरूआत**

सं० 15/9/2003-डीजीएडी - चूँकि निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है) ने 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात अधिनियम भी कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं वसूली और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात नियमावली भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए यूएस, ईयू, चेक गणराज्य और कोरिया गणराज्य के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित तथा आईटीसीएचएस वर्गीकरण के उपशीर्ष 283711 के अंतर्गत आने वाले सोडियम साइनाइड (जिसे एतदपश्चात संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों की जांच की और उन पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की थी। अंतरिम जांच परिणाम दिनांक 15 अक्टूबर, 1999 की अधिसूचना द्वारा प्रकाशित किए गए थे और संबद्ध वस्तुओं पर दिनांक 27 दिसम्बर, 1999 की सीमाशुल्क अधिसूचना संख्या 134/99-सीमाशुल्क द्वारा अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था। प्राधिकारी ने 7 मार्च, 2000 को अंतिम जांच परिणाम निकाला और केन्द्र सरकार की दिनांक 6 जून, 2000 की अधिसूचना सं० 83/2000 जो कि दिनांक 31 जनवरी, 2001 की अधिसूचना सं० 10/2001-सीमाशुल्क द्वारा संशोधित की गयी थी, द्वारा निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

2. और चूँकि, निर्दिष्ट प्राधिकारी को उपर्युक्त अधिसूचनाओं के अंतर्गत संबंधित माल पर अगले 5 वर्षों तक लगाए गए पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने के लिए निर्णायक समीक्षा जांच करने हेतु घरेलू उद्योग की ओर से मैसर्स साइनाइड्स एण्ड कैमिकल्स कम्पनी (सीसीसी) की ओर से एक आवेदन प्राप्त हुआ था। घरेलू उद्योग की ओर से किए गए अनुरोध के आधार पर प्राधिकारी ने यह निर्धारित करने के लिए कि क्या

शुल्क समाप्त करने से पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना रहेगी, 29 मार्च, 2004 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जो कि उपर्युक्त देशों के खिलाफ प्रभावी शुल्क के बारे में पाटनरोधी निर्णायक समीक्षा जांच शुरू करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई थी।

3. और चूंकि, 31 जनवरी, 2001 की अधिसूचना सं० 10/2001 सीमाशुल्क द्वारा यथा संशोधित 6 जून, 2000 की अधिसूचना सं० 83/2000 द्वारा यथा अधिसूचित पाटनरोधी शुल्क अधिनियम की धारा 9(क) (5) के अनुसार 23 जून, 2005 की अधिसूचना सं० 56/2005 द्वारा 26 दिसम्बर, 2005 तक बढ़ाया गया था।

#### ख. प्रक्रिया

4. इस जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है।

(i) समीक्षा की शुरुआत करने के बाद प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार अपेक्षित सूचना प्राप्त करने के लिए संबद्ध देशों के ज्ञात सभी निर्यातकों/उत्पादकों को जांच संबंधी अधिसूचना के साथ प्रश्नावलियां भेजी। इस जांच के प्रयोजनार्थ जांचाधीन देश थे यूएस, ईयू, चेक गणराज्य, कोरिया गणराज्य। तथापि ईयू का विस्तार होने और विस्तारित ईयू के चेक गणराज्य को शामिल करने के कारण जांच में विस्तारित ईयू, अमरीका, कोरिया गणराज्य (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश/क्षेत्र कहा गया है) शामिल हैं।

(ii) नई दिल्ली में स्थित संबद्ध देश के दूतावासों/उच्चयोगों/प्रतिनिधियों को नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरू करने के संबंध में सूचना दी गयी जिसमें यह अनुरोध किया गया कि वे अपने-अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्रों, याचिकाओं और प्रश्नावलियों की प्रतियाँ ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की एक सूची के साथ संबद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को भी भेजी गयी थीं।

(iii) यह जांच 01.04.2003 से 31.12.2003 (जांच अवधि) की अवधि के लिए की गयी थी। तथापि, क्षति की जाँच 1999-2000 से 2002-2003 एवं जांच अवधि के लिए की गयी थी।

(iv) केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी), वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे मुहैया कराने का अनुरोध किया गया था।

(v) जांच शुरुआत के प्रत्युत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों से उनके कानूनी प्रतिनिधियों के जरिए पत्र प्राप्त हुए थे :-

(क) मैसर्स टोंग सुहपेट्रोकेमिकल्स कारपोरेशन, कोरिया गणराज्य (संबद्ध माल का उत्पादक) मैसर्स हानवा कारपोरेशन, कोरिया गणराज्य के माध्यम से निर्यातक।

(ख) मैसर्स डीएसएम एक्रीलोनाइट्रिल ने अपने पत्र में प्राधिकारी को यह सूचित किया था कि वह एनएसीएन का उत्पादन एवं बिक्री इसके द्रव रूप में करता है और उसके कार्यकलाप केवल पश्चिमी यूरोप तक सीमित हैं।

(ग) बीएसएफएजी ने सूचित किया कि उनके उत्पादों का उपयोग केवल आबद्ध रूप से किया जाता है और जर्मनी के बाहर एनएसीएन की बिक्री नहीं करते हैं।

संदर्भित किसी भी देश के किसी अन्य निर्यातक ने जांच संबंधी अधिसूचना का किसी भी रूप में कोई उत्तर नहीं दिया है।

(vi) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना प्राप्त करने के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गयीं। संबद्ध माल के निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं ने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना प्रत्युत्तर में अपने उत्तर प्रस्तुत किए हैं :-

(क) मैसर्स टेक्नो-कॉमर्सियल ट्रेडर्स, नई दिल्ली

(ख) मैसर्स दौराला आर्गनिक्स, नई दिल्ली

(vii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंश सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।

(viii) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करने के लिए सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) तथा आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर इष्टतम लागत तथा भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत की गणना करने हेतु घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का संभव सीमा तक सत्यापन किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।

(ix) प्राधिकारी ने 9.8.2004 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन हितबद्ध पक्षों को मौखिक रूप से सुनने के लिए किया जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों, संबद्ध वस्तु के निर्यातकों, आयातकों/प्रयोक्ताओं और ईयू के शिष्टमण्डल के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सार्वजनिक सुनवाई में शामिल पक्षों से, मौखिक रूप से व्यक्त विचारों को लिखित रूप में दाखिल करने का अनुरोध किया गया था।

(x) इस जांच में प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को 12 सितम्बर, 2005 को प्रकटन विवरण जारी किया जिसमें प्राधिकारी द्वारा विचारित आवश्यक तथ्यों और उक्त खुलासे के हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियां मांगी गयी थी। हितबद्ध पक्षों से प्राप्त प्रकटन विवरणों की टिप्पणियों पर भी संगत सीमा तक इन परिणामों में विचार किया गया है।

(xi) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के दावों की गोपनीयता की जांच की है। जो सूचना गोपनीय स्वरूप की है अथवा जो सूचना हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उसके अगोपनीय सारांश के साथ गोपनीय आधार पर प्रदान की गयी है उसे गोपनीय माना गया है।

\*\*\*\* यह चिह्न इस अधिसूचना में याचिकाकर्ता द्वारा गोपनीय आधार पर दी गयी सूचना तथा नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे गोपनीय ही माने जाने का द्योतक है।

#### ग. विचाराधीन उत्पाद और "समान वस्तु"

5. मूल जांच में विचाराधीन उत्पाद और प्राधिकारी के अंतिम जांच परिणामों के आधार पर जिस उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लगेगा वह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमाशुल्क उपशीर्ष 283711 के अंतर्गत

वर्गीकृत सम्बद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सोडियम साइनाइड (एनएसीएन) है। यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वर्तमान जांच पर किसी तरह से बाध्यकारी नहीं है। सोडियम साइनाइड शुद्ध मूल अकार्बनिक रसायन है। इसका निर्माण कास्टिक सोडा के साथ हाइड्रो साइनिक एसिड (एचसीएन) की प्रतिक्रिया द्वारा किया जाता है। इसका उपयोग मुख्यतः डाई इण्टरमीडिएट्स, इलैक्ट्रो-प्लेटिंग रसायन जैसे उद्योगों द्वारा और हीट ट्रीटमेंट साल्ट्स स्वर्ण प्राप्ति आदि के लिए किया जाता है।

#### घ. जांच शुरुआत और घरेलू उद्योग की स्थिति

6. इस निर्णायक समीक्षा की शुरुआत अधिनियमों की धारा 9क (5) के साथ पठित पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 11.3 के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से मैसर्स साइनाइड एवं कैमिकल्स कारपोरेशन (सीसीसी) द्वारा प्रस्तुत विधिवत साक्ष्ययुक्त अनुरोध और मैसर्स गुजरात अल्कालिस एंड कैमिकल्स लि० द्वारा समर्थित अनुरोध के आधार पर शुरू की गयी है और इसे किसी पक्षकार द्वारा चुनौती नहीं दी गयी है। अतः आवेदक मैसर्स साइनाइड एण्ड कैमिकल्स जो भारत में संबद्ध माल का अधिकांश उत्पादन करता है, वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग बनता है।

#### ड. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दे

7. इस समीक्षा जांच के पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और उनके तर्कों का सार निम्नानुसार है :-

##### ड.1 घरेलू उद्योग के विचार

8. घरेलू उद्योग ने अपने विभिन्न अनुरोधों में अन्य तर्कों के साथ-साथ ये तर्क दिए हैं।

- कि मैसर्स सीसीसी और जीएसीएल भारत में संबद्ध माल के दो विनिर्माता हैं। यद्यपि सीसीसी, अमोनिया, कास्टिक सोडा और प्राकृतिक गैस से अकार्बनिक सिंथेसिस प्रणाली का प्रयोग करके ग्रास रूट लेवल से एनएसीसी का उत्पादन करता है, तथापि जीएसीएल एनएसीएन का, विनिर्माण करने के लिए आईपीसीएल से एचसीएन अर्जित करता है। यह तर्क दिया गया है कि एचसीएन पाइपलाइनों के जरिए जीएसीएल को आपूर्ति की गयी आईपीसीएल का सह-उत्पाद है।
- कि प्राकृतिक गैस और अमोनिया दोनों की कीमतें बढ़ती रही हैं जबकि एनएसीएन की कीमतें घटती रही हैं। एनएसीएन की कीमतें \*\*\*\*\* रूपए/पीएमटी से घटकर \*\*\*\*\* रूपए/पीएमटी हो गयी हैं।
- कि जीएसीएल एक सरकारी क्षेत्र का उपक्रम है जो अपनी कार्यक्षमता के लिए जाना जाता है और उसे एक उचित आय प्राप्त होनी चाहिए। तथापि, जीएसीएल को कोरिया के निर्यातकों द्वारा पेशकश की गयी कीमतों की बराबरी करने के लिए बाध्य किया जाता है जो कि लगभग \*\*\*\* रूपए/ है।
- कि एनएसीएन के बाजार में वृद्धि हुई है किन्तु कोरिया के निर्यातक द्वारा इस वृद्धि की उपेक्षा की गयी है; कम्पनी की माल-सूची बहुत बड़ी है और अब इसका लगभग 4 महीने का उत्पादन हो गया है। अतः घरेलू उद्योग को निर्यात करने के लिए बाध्य किया गया है क्योंकि यदि इसका अधिकतम उपयोग नहीं किया गया तो अमोनिया की खपत संबंधी मापदण्ड बढ़ जाएगा।
- कि मूल जांच और सभी परवर्ती जाँचों में मैसर्स हन्वा को नकारात्मक पाटन मार्जिन दिया गया है हालांकि उनके तुलन पत्र में घाटा दर्शाया गया है।
- यह कि कास्टिक सोडा एवं क्लोरीन का उत्पादन हन्वा कैमिकल्स द्वारा किया जाता है जो कि मै० हन्वा कारपोरेशन की एक सहायक कम्पनी है और इसकी आपूर्ति मै० तोंगशु, जो की एचसीएन का उत्पादन करती है, को की जाती है। इसलिए, यह सम्भव है कि तोंगशु और हन्वा के बीच एनएसीएन की पुनर्खरीद के बारे में किसी प्रकार की व्यवस्था हो।
- यह कि तोंगशु ने भारत के लिए वस्तुओं का बीजक तैयार नहीं किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि मै० हन्वा ने तोंगशु से वस्तुओं की खरीद कर उनका भारत को निर्यात किया। इसलिए इस बात की जाँच किये जाने की जरूरत है कि क्या एक व्यापारिक कम्पनी पाटन मार्जिन की हकदार है।

- यह कि एनएसीएन के विनिर्माण के लिए तोंगशु द्वारा एचसीएन के अन्तर इकाई अन्तरण की कीमत का निर्धारण एक सह-उत्पाद के रूप में किया जाना चाहिए न कि उसके उप उत्पाद के रूप में जैसा कि निर्यातक ने दावा किया है।
- यह कि उत्पादक-निर्यातक ने उत्पादन की सभी संबद्ध लागत और विचाराधीन उत्पाद के एसजीए खर्चों को सही तरीके से आबंटित नहीं किया है और इसलिए उत्पादक की घरेलू बिक्रियाँ व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में नहीं आती हैं।

## ड.2 कोरिया जन.गण. के प्रतिवादी निर्यातक के विचार (मै0 हन्वा कार्पोरेशन एवं टीएसपीसी)

9. मै0 हन्वा कार्पोरेशन और मै0 तोंगशु पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन जो कि कोरिया जन.गण. में सम्बद्ध वस्तु के निर्यातक-उत्पादक हैं ने अपने संयुक्त उत्तर में अन्य बातों के साथ-साथ यह निवेदन किया है कि:-

- याचिकाकर्ता कम्पनी सोडियम साइनाइड के तीन ग्रेडों का उत्पादन और उत्पाद की विशेषता एवं शुद्धता के स्तर का विशेष उल्लेख किये बिना स्थानीय बाजार में विक्रय करती है, वे हैं एनक्यू, एसक्यू एवं मिश्रित गुणवत्ता वाला माल। विश्व में कोई विनिर्माता सोडियम साइनाइड का अलग-अलग ग्रेड में विक्रय नहीं कर रहा है। सामान्यतया केवल एक ग्रेड है जिसका शुद्धता स्तर न्यूनतम 98% है।
- वे कभी भी किसी प्रकार के पाटन कार्यकलापों में शामिल नहीं रहे हैं। हालाँकि उनकी क्षमता में वृद्धि हुई है तथापि भारत को उनकी बिक्री में भी 1999 से वृद्धि हो रही है। जाँच अवधि के दौरान घरेलू बिक्रियों के साथ-साथ, अन्य देशों की तुलना में भारत को किये गये निर्यातों की कीमतें तुलनात्मक रूप से अधिक रही हैं। याचिकाकर्ता ने माना है कि भारत को कोरिया का निर्यात मूल्य, अमेरिका के विश्व को औसत निर्यात मूल्य से अधिक है।
- याचिकाकर्ता का अनुमान है कि अमेरिका के उत्पादक/निर्यातक एक लम्बे समय से पाटन कार्यकलापों में शामिल रहे हैं और यह आश्चर्यजनक है कि कैसे कोई उत्पादक/निर्यातक अपने सारे निर्यातों के लिए इतने लम्बे समय से पाटन कार्यकलापों में शामिल रहते हुए बच रह सकता है।
- 1999-2000 में प्रारंभिक जाँच में प्राधिकारी ने भारत को निर्यात किये जाने वाले एचडब्ल्यूसी-टीएसपीसी के निर्यात मूल्यों को गैर-पाटित मूल्य के रूप में निर्धारित किया है और प्रारंभिक जाँच से वर्तमान समीक्षा जाँच तक उनके मूल्यों में वृद्धि हो गयी है। जैसा कि कच्चे माल इत्यादि के मूल्यों में वास्तविक परिवर्तन नहीं हुए हैं इसलिए भारत को वर्तमान निर्यात भी गैर-पाटित मूल्यों पर हुए हैं।
- कोरियाई निर्यातकों के विश्व निर्यातों में वृद्धि के संबंध में कोई संदेह नहीं है क्योंकि कोरिया गण. के दोनों उत्पादकों की क्षमता एवं उत्पादन में वृद्धि हुई है। लेकिन, याचिकाकर्ता एक गलत तस्वीर पेश कर रहे हैं कि उनकी निर्यात मात्रा में वृद्धि के कारण वर्षों से कीमतों में कमी चल रही है। कीमतें वर्षों से कमोवेश स्थिर रही है; तथापि, वर्ष 2003 से सोने की कीमतों में उछाल के कारण सोडियम साइनाइड की कीमतों में वृद्धि की प्रवृत्ति रही है।
- यह स्पष्ट है कि भारत के अलावा किसी अन्य देश ने सोडियम साइनाइड के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लागया है। भारत को छोड़कर विश्व में किन्ही अन्य देशों द्वारा एचडब्ल्यूसी - टीएसपीसी को किसी पाटनरोधी जाँच का सामना नहीं करना पड़ा है।
- यद्यपि यह सत्य है कि टीएसपीसी के निर्यातों में वर्षों से वृद्धि होती रही है, तथापि यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि टीएसपीसी के लिए भारत कभी भी लक्ष्य देश नहीं रहा है और यह उसकी निर्यात की मात्राओं से साबित होता है। यदि टीएसपीसी ने याचिकाकर्ता को नुकसान पहुँचाने के किसी इरादे से

क्षतिकारी कीमत का सहारा लिया है, तो यह आसानी से किया जा सकता था क्योंकि मूल जाँच में टीएसपीसी से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया गया था।

- सम्बद्ध वस्तु की सामान्य कीमत प्रवृत्ति पूरे विश्व में 900-1000 प्रति मी. टन अमरीकी डालर की सीमा में है। यदि सोडियम साइनाइड के प्रमुख ग्रेड संदर्भ लें तो किसी भी मामले में घरेलू उद्योग की औसत बिक्रियों की वसूली अत्यधिक रही है, यदि उसके बाद घरेलू उद्योग दावा करता है कि उत्पादन की उच्च लागत के कारण उन्हें क्षति हो रही है तो उच्च उत्पादन लागत के अन्य कारण हो सकते हैं जैसे अमितव्ययी क्षमताएं/प्रौद्योगिकी अक्षम संचालन, उप-मानक उत्पाद का उत्पादन, अधिक ऊमरी खर्च इत्यादि।

### ड.3 अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

10. आयातकों और हितबद्ध पार्टियों के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

#### ड.3.1 टेक्नो कामर्शियल ट्रेडर्स

11. मै0 टेक्नो कामर्शियल ट्रेडर्स ने सम्बद्ध देश से सम्बद्ध वस्तु के आयातक के रूप में अपना आवेदन प्रस्तुत किया है और तर्क दिये हैं कि

- सोडियम साइनाइड की माँग स्थानीय उत्पादकों की क्षमता से अधिक बढ़ गयी है और उसके आयातों से उन्हें कोई हानि नहीं हो रही है। इसके बजाय ये प्रयोक्ता उद्योग की माँग की पूर्ति करने एवं उनके प्रतिस्पर्धी बन रहने में सहायक हैं।
- भारतीय उत्पादकों को बिक्रियों में वर्ष दर वर्ष नियमित आधार पर वृद्धि हो रही है और निवल बिक्री वसूली अत्यधिक है।
- मै0 साइनाइड्स एंड केमिकल्स की बिक्री में सेकेंड क्वालिटी (एसक्यू) की काफी मात्रा शामिल है, जो सामान्य गुणवत्ता (एनक्यू) और मिश्रित गुणवत्ता से \*\*\*\*/-रूप प्रति मी. टन कम की है। लाभ मार्जिन अपेक्षाकृत अधिक होता यदि एसक्यू माल न बेचा गया होता
- अन्य घरेलू उत्पादक अर्थात् मै0 जीएसीएल का उत्पादन और बिक्री भी 2002 से बढ़ी है और 2001-2002 में \*\*\*\* मी. टन से \*\*\*\* मी. टन के स्तर तक पहुँची है। जीएसीएल की सूची हमेशा कुल उत्पादन बिक्रियों को दर्शाते हुए कम से कम स्तर पर रहती है। यह याचिकाकर्ता के वसूली मूल्य के संबंध में एक अहम भूमिका अदा करता है क्योंकि जीएसीएल, जब अधिक उत्पादन कर रहा होता है तो अपनी कीमत को घटाता है और याचिकाकर्ता कम्पनी अर्थात् साइनाइड्स एंड केमिकल्स (सीसीसी) अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए सदा जीएसीएल का अनुसरण करती है।
- सोडियम साइनाइड की घरेलू कीमत हमेशा सहायक कम्पनी जीएसीएल की उत्पादन मात्रा पर निर्भर करती है। जब कभी भी उनका उत्पादन बढ़ता है जीएसीएल का घरेलू बाजार में कीमतों का कम करने का इतिहास रहा है। जीएसीएल के ऐसा करने का मूल कारण यह है कि वे हमेशा अपने सोडियम साइनाइड के भंडार को जितनी जल्दी सम्भव हो निस्तारण करना चाहते हैं। ऐतिहासिक तौर पर जीएसीएल का यह रवैया सीसीसी की कीमत नीति पर हमेशा दबाव बनाये रखता है और जब कभी जीएसीएल का उत्पादन सीसीसी से कम होता है सीसीसी हमेशा अपनी बाजार कीमतों में वृद्धि करने के सुअवसर का लाभ उठाता है।
- आयात केवल घरेलू मांग एवं पूर्ति के बीच के खालीपन को भरता है और किसी भी तरह घरेलू विनिर्माताओं के साथ प्रतिस्पर्धी नहीं है। भेषजीय एग्रो-केमिकल्स एवं एपीआई के निर्यात के कारण सोडियम साइनाइड की माँग में वृद्धि हो रही है।

- याचिकाकर्ता भी घरेलू कीमतों से काफी कम कीमत पर सोडियम साइनाइड का निर्यात करते हैं अन्यथा उनकी लाभप्रदता अब भी काफी अधिक होती ।
- इसलिए, हानि (यदि कोई हुई है) जिसका याचिकाकर्ता द्वारा दावा किया गया है, स्व आरोपित है और आयातों की इसमें कोई भूमिका नहीं है ।
- भारत में एचसीएन केवल आईपीसीएल द्वारा बेची जाती है जो एक्राइलोनिट्राइल और इसके आगे एक्रिलिक फाइबर का उत्पादन करते समय एचसीएन को उप उत्पाद के रूप में प्राप्त कर रहे हैं । वे उसी की आपूर्ति जीएसीएल एवं जीएसएफसी की सीमापार पाइप लाइन द्वारा आपूर्ति कर रहे हैं । यह विदित तथ्य है कि एचसीएन का अन्यथा निर्यात अथवा बिक्री नहीं की जा सकती, इसे याचिकाकर्ता ने अपने आवेदन में भी स्वीकार एवं सम्मिलित किया है ।
- सम्बंधित अवधि के लिए याचिकाकर्ता के तुलन पत्र में दर्शाये गये अंतिम स्टॉक के अनुसार एचसीएन का स्टॉक मूल्य (लागत) आईपीसीएल की बिक्री कीमत से अत्यधिक तुलनीय है ।

### ड.3.2 मै0 दौराला आर्गनिक्स लिमिटेड

12. मै0 दौराला आर्गनिक्स लिमिटेड ने सम्बद्ध वस्तु के आयातक एवं प्रयोक्ता के रूप में अपने आवेदन एवं टिप्पणियाँ प्रस्तुत की हैं और अन्य बातों के साथ-साथ ये तर्क दिये हैं कि

- याचिकाकर्ता कम्पनी ने अपनी ग्रुप कम्पनियों को भारी ब्याज मुक्त ऋण स्वीकृत किया है और उसकी बैलेंस शीट के अनुसार 31.03.2003 तक वह बकाया था । चूँकि ऋणधारकों ने ऋणों/अग्रिमों की वापसी नहीं की है इसलिए यह सम्भवतः उत्पादक कम्पनी को कर के पहले लाभ (पीबीटी) में कमी का एक मुख्य कारण है । उपर्युक्त के बावजूद पिछले तीन वित्तीय वर्षों से पीटीबी में लगातार सुधार हो रहा है ।
- याचिकाकर्ता कम्पनी स्थानीय बाजार में अलग-अलग कीमतों पर विभिन्न ग्रेडों के सोडियम साइनाइड बेच रही है । कीमतें \*\*\* रूपए/किग्रा0 से \*\*\* रूपए/किग्रा0 तक भिन्न-भिन्न रही है और वास्तव में वे घटिया ग्रेड का माल बेच रहे हैं । इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वे ऐसे भिन्न-भिन्न ग्रेडों के सोडियम साइनाइड बेच रहे होंगे, जिनका उल्लेख याचिका में नहीं किया गया है ।
- विनिमय दर एवं उत्पाद की मूल कीमत के कारण पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद सोडियम साइनाइड की कीमत में 20% से अधिक की वृद्धि हुई है ।

### ड.3.3 अन्य निर्यातक एवं हितबद्ध पार्टियाँ

13. मै0 साइप्लस जीएमबीएच, जर्मनी ने अपने संक्षिप्त आवेदन में उल्लेख किया है कि भारत को बेचे गये सोडियम साइनाइड की उच्च गुणवत्ता के कारण उनके द्वारा ली गयी कीमतें सही है और भारत में सोडियम साइनाइड के उपभोक्ताओं के लिए कोई प्रतिपूरक प्रबंध नहीं है । बीएसएफ जर्मनी ने भी उल्लेख किया है कि वे एनएसीएन का उत्पादन केवल कैप्टिव खपत के लिए करते हैं । इसलिए, उन्होंने इस जाँच में भाग नहीं लिया है और भविष्य में यदि आवश्यकता हुई तो वे प्राधिकारी से एक न्यूशिपर समीक्षा करने का अनुरोध करेंगे ।

14. भारतीय औषधि विनिर्माता एसोसिएशन ने अनुरोध किया है कि भारत में उत्पाद के केवल दो विनिर्माताओं द्वारा एकतरफा कीमत वृद्धि सहित उत्पाद की आवधिक कमी है । इन दोनों इकाइयों का उत्पादन माँग की तुलना में काफी कम है और उत्पादकों द्वारा कीमत में वृद्धि उचित नहीं है । चूँकि अधिकांश औषधियों की कीमतें नियंत्रित हैं इसलिए औषधि विनिर्माताओं द्वारा लागत वृद्धि के बोझ को उपभोक्ताओं, अर्थात् प्रतिपादनकर्ता पर डाले जाने की समभावना नहीं है ।

**च. प्राधिकारी द्वारा जाँच**

15. प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों के उपर्युक्त तर्कों को ध्यान में रखा है और जाँच परिणामों में उपयुक्त स्थान पर इन मुद्दों पर ध्यान दिया गया है।

16. अधिनियम की धारा 9क(5) में प्राधिकारी के लिए निर्णायक समीक्षा में जाँच करना अपेक्षित है कि क्या इस शुल्क को समाप्त करने से पाटन और क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। अतः प्राधिकारी के समक्ष निर्धारण के लिए ये मुद्दे हैं :-

- यदि निश्चयात्मक शुल्क हटा दिया जाता है अथवा उनकी वैधता तिथि समाप्त हो जाती है, तो क्या पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है;
- यदि निश्चयात्मक शुल्क समाप्त करने अथवा हटाने की अनुमति दी जाती है तो, क्या घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

17. उपर्युक्त के आधार पर इन मुद्दों की जाँच अगले पैराग्राफों में की गयी है।

**छ. पाटन का जारी रहना अथवा इसकी पुनरावृत्ति****छ.1 आवेदक के विचार**

18. अपनी निर्णायक समीक्षा संबंधी जांचों में अमरीकी प्रथा का हवाला देते हुए आवेदकों ने तर्क दिया है कि निम्नलिखित परिस्थितियाँ किसी निर्णायक समीक्षा में सकारात्मक निर्धारण का कारण बनेंगी:

- निश्चयात्मक शुल्क संबंधी आदेश के जारी होने के पश्चात पाटन का 0.5 प्रतिशत से ऊपर किसी स्तर पर जारी रहना; या
- आदेश जारी होने के पश्चात आयातों का बंद होना; या
- आदेश जारी होने के पश्चात पाटन समाप्त कर दिया गया था और आयात मात्राओं में अत्यधिक कमी आयी थी।

19. आवेदकों ने यह भी तर्क दिया है कि जांच अवधि में वास्तविक आयातों का अस्तित्व किसी निर्णायक समीक्षा जांच में एक पूर्वापेक्षा नहीं होती है जो वास्तविक पाटन और क्षति मापदण्ड की बजाय संभावना मापदण्ड अधिक होता है। इस संबंध में उन्होंने बेलारूस से पोलिस्टर स्टैपल फाइबर के मामले में ई सी द्वारा दिए गए निर्णय का हवाला दिया है जिसमें उक्त प्राधिकारी ने यह मानते हुए कि शुल्क वापिस लेने से पाटन की पुनरावृत्ति होगी, उस देश से कोई आयात न होने के बावजूद शुल्क को जारी रखा था। आवेदकों ने ब्राजील; भारत से पटसन के थैलों का आयात, निर्णायक समीक्षा मामले का भी हवाला दिया है जहाँ पांच वर्ष की समूची अवधि में भारत से कोई आयात न होने के बावजूद शुल्कों को जारी रखा गया है।

20. आवेदकों का यह भी तर्क है कि जापान से कोरोसन रेजिस्टेंट कार्बन स्टील प्रोडक्ट्स पर पाटनरोधी शुल्कों संबंधी अमरीकी निर्णायक समीक्षा मामले में डब्ल्यू टी ओ अपीलीय निकाय ने यह व्यवस्था दी थी कि पाटनरोधी करार के अंतर्गत पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति की संभावना का निर्धारण करने में जांच प्राधिकारियों की पाटन मार्जिन की गणना करने या उस पर निर्भर रहने की कोई बाध्यता नहीं है।



21. संक्षेप में आवेदकों के तर्क हैं कि निम्नलिखित किसी स्थिति में अपरिहार्य निष्कर्ष पाटन के जारी रहने की संभावना अथवा-पाटन के पुनः होने की संभावना होगी;

- उस स्थिति में जहां संबद्ध अवधि में उत्पाद का संबद्ध देशों से भारत को सामान्य मूल्य से कम कीमत पर निर्यात किया गया है;
- उस स्थिति में जहां पाटनरोधी शुल्क लगाने के पश्चात् उत्पाद के निर्यात बंद हो गए हैं लेकिन निर्यातक देश के उत्पादक अन्य देशों में पाटित कीमतों पर उत्पाद का निर्यात करना जारी रख रहे हैं।

## छ.2 निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

22. अंतर्राष्ट्रीय प्रथाओं पर आधारित निर्णायक समीक्षा जांच के मानकों एवं कार्यक्षेत्र के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए उपर्युक्त कानूनी तर्कों के संबंध में कोरिया गणराज्य से सहयोगी निर्यातकों सहित हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई वास्तविक तर्क नहीं दिया गया है।

## छ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

23. प्राधिकारी ने उनकी निर्णायक समीक्षाओं में विभिन्न प्राधिकारियों की पद्धति और प्रथाओं और इस विषय पर डब्ल्यू टी ओ के प्रासंगिक न्यायशास्त्र के संबंध में आवेदकों द्वारा दिए गए तर्कों को नोट किया है। पाटन के जारी रहने और इसकी पुनरावृत्ति की संभावना संबंधी मुद्दे की निम्नानुसार जांच की गयी है:-

## छ.4 पाटन का जारी रहना; सामान्य मूल्यों, निर्यात कीमतों और पाटन मार्जिनों का निर्धारण

24. मै0 टोंग शुह पैट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन (टी एस पी सी) और मै0 हनवाह कार्पोरेशन (एच डब्ल्यू सी) के अलावा संबद्ध देशों से किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी को इन देशों से संबद्ध वस्तुओं के सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण करने में समर्थ बनाने के लिए कोई सूचना प्रदान नहीं की है और जांच में सहयोग नहीं किया है। इसलिए प्राधिकारी ने करार के अनुच्छेद 6.8 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर संबद्ध देशों के असहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है।

### छ.4.1 कोरिया गणराज्य

25. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि और क्षति जांच अवधि के दौरान कोरिया गणराज्य से संबद्ध वस्तुओं का अत्यधिक निर्यात किया गया था। यद्यपि कोरिया में संबद्ध वस्तुओं के एक से अधिक उत्पादक हैं, तथापि केवल एक उत्पादक निर्यातक संगठन ने पूर्ण जवाब दाखिल किया है और जांच में सहयोग किया है। इसलिए इस देश से मौजूदा पाटन की जांच उस देश के निर्यातक से प्राप्त सहयोग के आलोक में की गयी है।

#### छ.4.1.1 मै0 टोंग शुह पैट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन और मै0 हनवाह कार्पोरेशन, कोरिया गणराज्य

26. मै0 टोंग शुह पैट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन और मै0 हनवाह कार्पोरेशन, कोरिया गणराज्य के उत्पादक, निर्यातक संगठन ने अपनी घरेलू बिक्रियों, भारत को किए गए निर्यात और उत्पादन लागत संबंधी पूर्ण ब्यौरे के साथ अपना संयुक्त जवाब दाखिल किया है और जांच में पूर्ण सहयोग किया है।

प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि मूल जांच में उपर्युक्त निर्यातक-उत्पादक संगठन ने जांच में पूर्ण सहयोग किया था और उक्त जांच में जांच अवधि के दौरान उनके संबंध में पाटन मार्जिन नकारात्मक पाया गया था। तदनुसार, मूल जांच में निर्यातक के विरुद्ध कोई शुल्क नहीं लगाया गया था।

27. उनके मौजूदा जवाब के आधार पर इस निर्यातक-उत्पादक संगठन द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का सत्यापन किया गया था और सहयोगी निर्यातक के संबंध में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और मौजूदा पाटन मार्जिन का निर्धारण दाखिल किए गए और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित जवाब के आधार पर किया गया है।

**(क) सामान्य मूल्य**

28. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान हन्वा तथा टी एस पी सी ने भारत को सोडियम साइनाइड के केवल एक ग्रेड अर्थात् सोडियम साइनाइड (न्यूनतम 98 प्रतिशत) का भारत को निर्यात किया है। टी एस पी सी द्वारा घरेलू बाजार में बेचा गया उत्पाद भारत को निर्यातित उत्पाद के समान है। अतः निर्यातक की घरेलू बाजार में समग्रतः सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ "समान वस्तु" नहीं माना गया है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री उत्पादक अर्थात् टी एस पी सी द्वारा सीधे की जाती है। तथापि, भारत को समूचे निर्यात हन्वा कार्पोरेशन के जरिए किए जाते हैं। सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने उत्पादक की घरेलू बाजार बिक्री की जांच की है और इसे व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के अधीन रखा है।

29. टी एस पी सी की उत्पादन लागत की जांच उनके रिकार्डों से की गयी थी। यह पाया गया था कि टी एस पी द्वारा एन ए सी एन का उत्पादन एच सी एल तथा एन ए ओ एच को मुख्य कच्ची सामग्री के रूप में प्रयोग करके किया जाता है। जहां एन ए ओ एच को घरेलू बाजार से प्राप्त किया जाता है वहीं टी एस पी सी उलसान स्थित अपने फैक्ट्री लोनोड्राइल संयंत्र से उत्पादित अपने ही एच सी एन का उपयोग करता है। उत्पादक का यह मत है कि एच सी एन उनके मुख्य उत्पाद ए सी एन के विनिर्माण की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न हुआ एक सह उत्पाद है। निर्यातक/उत्पादक द्वारा यह दावा किया गया है कि एच सी एन अत्यन्त खतरनाक रसायन है और विश्व बाजार में इसका व्यापार नहीं किया जाता है। निर्यातक ने आगे यह अनुरोध किया है कि चूंकि उत्पाद का कोई तय मूल्य नहीं है इसलिए इसकी कोई उचित लागत निर्धारित नहीं की जा सकती। तथापि, सोडियम साइनाइड की उत्पादन लागत का निर्धारण करने के लिए इन्सीनरेशन लागत के बराबर लागत को कच्ची सामग्री में जोड़ा गया है। कंपनी ने यह भी तर्क दिया है कि एच सी एन के भंडारण तथा उपयोग में शामिल मामूली लागत को उनके उत्तर में प्रदर्शित एच सी एन की यूनिट लागत में दर्शाया गया है। चूंकि वे काफी समय से इस उत्पाद को अपने प्रमुख उत्पादन का सह उत्पाद मानते रहे हैं इसलिए उनके द्वारा इस उत्पाद के लिए लागत संबंधी आंकड़े अलग से नहीं रखे गए हैं।

30. दूसरी ओर घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि एच सी एन को सह उत्पाद नहीं माना जा सकता और न ही उसे माना जाना चाहिए। और इसे उत्पादन की उचित लागत में शामिल करने के लिए सह उत्पाद माना जाना चाहिए। इस संबंध में उन्होंने लेखा मानकों के अनुसार उप उत्पाद एवं सह उत्पाद की अनेक परिभाषाएं प्रस्तुत की हैं। उन्होंने एन ए ओ एच की लागत और एन ए सी एन का उत्पादन करने के लिए एन ए ओ एच के क्रेता के रूप में टी एस पी सी तथा एन ए ओ एच के उत्पादक

एवं टी एस पी सी से एन ए सी एन के क्रेता के रूप में हन्वा कार्पोरेशन के बीच क्षतिपूरक व्यवस्थाओं के बारे में अनेक तर्क भी दिए हैं। उपर्युक्त के अलावा घरेलू उद्योग ने ब्याज लागत जैसे एन ए सी एन के उत्पादन से जुड़े लागत संबंधी अनेक तत्वों के आबंटन के मुद्दे को उठाया है। विचाराधीन उत्पाद की वास्तविक उत्पादन लागत का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए मुद्दों की जांच की है।

31. उत्पादक टी एस पी सी ने तर्क दिया है कि एच सी एन, ए सी एन की उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादित एक सह उत्पाद है और तदनुसार एच सी एन की लागत आबंटित की गयी है। उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि स्थानीय उपयोग हेतु एक्रास द फेंस सप्लाइ को छोड़कर एच सी एन का विश्व में कहीं भी व्यापार नहीं किया जाता है। अतः उत्पाद की वास्तविक अंतर्राष्ट्रीय कीमत निर्धारित नहीं की जा सकती। निर्यातक ने इस उत्पाद के भारतीय उत्पादक अर्थात् मै0 आई पी सी एल द्वारा अपने उपभोक्ताओं को आपूर्ति की गयी एच सी एन की कीमत उचित तुलना के लिए प्रस्तुत भी की थी। यदि प्राधिकारी यह तय करना चाहते हों कि इस उत्पाद को उप उत्पाद माना जाना चाहिए।

32. उत्पादक-निर्यातक तथा घरेलू उद्योग के विरोधाभासी विचारों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने एन ए सी एन के दूसरे भारतीय उत्पादक अर्थात् मै0 गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि0 (जी ए सी एल) और ए सी एन तथा एन सी एन के एकमात्र भारतीय उत्पादक अर्थात् मै0 इंडियन पेट्रोकेमिकल कार्पोरेशन (आई पी सी एल) से अपने अपने उत्पादों के लागत संबंधी आंकड़े उपलब्ध कराने का अनुरोध किया था। दोनों कंपनियों के परिसरों का दौरा भी किया गया था ताकि उनकी उत्पादन प्रक्रिया एवं एच सी एन लागत आबंटन पद्धतियों को समझा जा सके। तथापि, न तो जी ए सी एल और न ही आई पी सी एल ऐसी कोई भरोसेमंद सूचना उपलब्ध करा सके जिससे उपोत्पाद के रूप में ए सी एन की विनिर्माण प्रक्रिया के दौरान उत्पादित एच सी एन के लागत के आबंटन को न्यायोचित ठहराया जा सके। एच सी एन के उत्पादक के रूप में आई पी सी एल तथा एच सी एन के एक्रास द फेंस उपभोक्ता के रूप में जी ए सी एल के बीच सौदा लागत का बेंचमार्क कीमत के रूप में सत्यापन भी किया गया था। तथापि, घरेलू उद्योग ने आई पी सी एल एवं जी ए सी एल के बीच सौदा लागत का इस आधार पर विरोध भी किया है कि आई पी सी एल एवं जी ए सी एल के बीच सौदा लागत में एच सी एन की सही कीमत प्रदर्शित नहीं होती है। घरेलू उद्योग से यह कहा गया था कि उत्पादक निर्यातक द्वारा आबंटित लागत अथवा भारतीय उत्पादक एवं उसके उपभोक्ताओं के बीच सौदा लागत के बारे में उनके द्वारा किए गए दावे को नकारने के लिए अपने कार्य के समर्थन में इस उत्पाद की वास्तविक अंतर्राष्ट्रीय सौदा कीमत का साक्ष्य प्रस्तुत करें।

33. घरेलू उद्योग ने अगस्त, 2000 में यू एस इनवायरनमेंटल प्रोटेक्शन एजेंसी द्वारा तैयार की गयी एक रिपोर्ट की प्रति प्रस्तुत की और उक्त रिपोर्ट के आधार पर घरेलू उद्योग ने यह दावा किया कि अमरीका में एच सी एन की कीमत 0.41 अमरीकी डालर से लेकर 0.60 अमरीकी डालर प्रति एल बी थी। अतः एन ए सी एन के उत्पादन लागत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ एच सी एन की औसत कीमत 0.50 अमरीकी डालर प्रति एल बी दी जानी चाहिए।

34. प्राधिकारी ने उक्त रिपोर्ट की सावधानीपूर्वक जांच की। वर्ष 2000 में तैयार की गयी यह रिपोर्ट खतरनाक अकार्बनिक रसायन उद्योगों को सूचीबद्ध करने के लिए प्रभावित उद्योगों के अधिक प्रभाव संबंधी विश्लेषण के लिए थी। तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट की जांच से घरेलू उद्योग के इस आशय के दावे को खास तरजीह नहीं मिली कि कोरिया के उत्पादक की एच सी एन लागत उक्त उपोत्पाद की कीमत निर्धारण संरचना पर आधारित होनी चाहिए। घरेलू उद्योग का इस आशय का दूसरा दावा कि एच सी एन की सौदा कीमत लगभग 0.50 अमरीकी डालर प्रति एल बी होनी चाहिए, भी वैध प्रतीत नहीं होता

है क्योंकि उक्त रिपोर्ट में उद्धृत औसत कीमत वर्ष 2000 के लिए है और अलग-अलग प्रक्रिया की लागत संरचना पर आधारित कीमतें जाहिर तौर पर कम लागत मितव्ययी हैं।

35. जहाँ तक कोरिया गणराज्य के प्रतिवादी निर्यातक/उत्पादक का संबंध है उत्पादक अपने ए सी एन संयंत्र से एन ए सी एन के उत्पादन हेतु अपने एच सी एन को उप उत्पाद के रूप में स्पष्ट रूप से प्राप्त कर रहा है और उसके पास उप उत्पाद हेतु उसकी खुद की लागत संरचना है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया के प्रतिवादी उत्पादक मै0 पी एस पी सी ने एच सी एन को ए सी एन संयंत्र के उप उत्पाद के रूप में मानते हुए उसकी इंसीनरेशन लागत तथा भंडारण एवं पारेषण की संबद्ध लागत आबंटित की है और तदनुसार इस लागत को एन ए सी एन के लिए कच्ची सामग्री की लागत के रूप में आबंटित किया गया है। यदि एच सी एन के भारतीय उत्पादक एवं उसके ग्राहकों के बीच सौदा कीमत को कोरियाई उत्पादक को एन ए सी एन के उत्पादन में एच सी एन के लिए आबंटित की जाने वाली कीमत के रूप में स्वीकार किया जाता है तो भी कुल लागत पर कोई खास प्रभाव नहीं देखा जा सकता। अतः प्राधिकारी कोरिया गणराज्य के सहयोगी उत्पादक द्वारा संबद्ध वस्तु के विनिर्माण में एच सी एन की किसी अन्य लागत संरचना को अपनाने के लिए घरेलू उद्योग के तर्कों में कोई सार नहीं पाते हैं।

36. उत्पादन लागत के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दों की जांच भी जांच के दौरान की गयी। तथापि उत्पादक की संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत उसके घरेलू बाजार में बिक्री कीमत से काफी कम पायी गयी थी।

37. प्रकटन विवरण के बाद के अपने अनुरोधों में घरेलू उद्योग ने अपने इस रूख को दोहराया है कि एच सी एन को ए सी एन उत्पादन के संयुक्त उत्पाद की तरह माना जाना चाहिए न कि उपोत्पाद की तरह। उन्होंने यह दलील दी है कि लागत लेखा मानक बोर्ड द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार एच सी एन को संयुक्त उत्पाद के रूप में माना जाना चाहिए। उन्होंने यह तर्क भी दिया है कि ऐसे उत्पादों की विपणनीयता प्रासंगिक नहीं है। अतः वर्तमान प्रयोजनों के लिए उत्पादों का सापेक्ष महत्व महत्वपूर्ण है तथा किसी स्थिति में एच सी एन को "कम महत्व" का नहीं कहा जा सकता, जो कि उपोत्पाद की परिभाषा है। घरेलू उद्योग ने आगे यह तर्क दिया है कि एच सी एन के पृथक्करण तथा खपत के स्तर से वास्तविक लागत शामिल हैं तथा इसे ध्यान में लिया जाना चाहिए। इस स्थिति में, डी आई ने संग्रहण तथा हैंडलिंग में जी ए सी एल को प्रदत्त अपनी लागत तथा अनिवार्य आवश्यकता के रूप में भस्मीकरण सुविधा के रखरखाव को संदर्भित किया है। घरेलू उद्योग ने यह दलील भी दी है कि उनके द्वारा प्रस्तुत यू एस पर्यावरणिक संरक्षण अभिकरण रिपोर्ट जोरदार ढंग से यह निर्धारित करती है कि एच सी एन की कीमतें संश्लेषित मार्ग से एच सी एन के उत्पादन की लागत के तुलनीय हो रही हैं तथा इन दोनों प्रौद्योगिकियों के बीच लागत अन्तर समग्रतः अप्रासंगिक है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क भी दिया है कि टोंग शुह की वार्षिक रिपोर्ट, जबकि एसीएन कीमतें अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उच्च थीं, घाटा दर्शाती हैं वहीं सोडियम साइनाइड के व्यापार में उन्होंने भारी लाभ दर्शाया है। इसलिए डी आई ने यह दलील दी है कि निर्यातक ने सोडियम साइनाइड तथा ए सी एन के उत्पादन तथा बिक्री से संबंधित लागत को पर्याप्त रूप से प्रकट नहीं किया है।

38. प्राधिकारी ने उन्हें बताई गई उप उत्पाद और संयुक्त उत्पाद की परिभाषाओं, उत्पाद की प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण एजेंसी रिपोर्ट तथा निर्यातक की लेखांकन प्रथाओं समेत वादी-प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न दस्तावेजों की जांच की है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं

कि मूल जांच में उत्पाद को एक उप-उत्पाद माना गया था और घरेलू उद्योग ने इस निर्णय के विरुद्ध अपील नहीं की थी। इस मामले के तथ्यगत मैट्रिक्स पर विचार करते हुए प्राधिकारी का यह विचार है कि वर्तमान मामले में निर्धारण के आधार में परिवर्तन का कोई कारण नहीं है।

39. जहाँ तक पृथक्करण के समय से खपत तक की एचसीएन की लागत और सोडियम साइनाइड के विनिर्माण में आने वाले विभिन्न अन्य व्ययों के आवंटन का संबंध है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के तर्कों की जांच की है और उनका यह विचार है कि सहयोगी निर्यातक द्वारा किया गया लागत आवंटन निर्यातक देश के लेखांकन मानकों के अनुरूप है। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा बताए आवंटन से निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः सहयोगी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

40. जहाँ तक उत्तर देने वाले निर्यातक की घरेलू बिक्री कीमत का संबंध है, निर्यातक ने कोरियाई बाजार में संबद्ध वस्तुओं के \*\*\*\*\* मी. टन के \*\*\*\*\* सौदे होने की सूचना दी है। तथापि, इनमें से अधिकांश सौदे कारखाना द्वार कीमत पर कोरिया के प्रमुख व्यापारिक संस्थानों के साथ किए गए हैं। घरेलू बाजार में उत्पादक की भारित औसत कारखाना द्वार कीमत, उत्पादक के रिकॉर्डों के अनुसार \*\*\*\*\* अमरीकी डॉलर प्रति मी. टन थी। किसी अन्य समायोजन का दावा नहीं किया गया है और न ही उत्पादक की कारखाना बाह्य कीमतों पर स्वीकार्य है। इसलिए कोरिया गणराज्य में उत्पाद का सामान्य मूल्य प्रति मी. टन \*\*\*\*\* अम. डा. परिकल्पित होता है।

### ख. निर्यात कीमत

41. निर्यातक- उत्पादक संयोजन ने जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के \*\*\*\*\* सौदों (\*\*\*\*\* मी. टन) की सूचना दी है। यह नोट किया गया है कि भारत में समग्र निर्यात सौदे-टीएसपीसी द्वारा विनिर्मित किए गए हैं और इन्हें हन्वा निगम के जरिए भेजा गया है। इन सौदों की जांच इनके रिकॉर्ड से की गई थी। यह देखा गया था कि टीएसपीसी लदान शर्तों के एफ ओ बी पत्तन पर एच डब्ल्यू सी को उत्पादों की बिक्री करता है और एच डब्ल्यू सी बाद में भारतीय ग्राहकों को सामग्रियों की बिक्री करता है। यद्यपि टीएसपीसी से हन्वा को वस्तुओं का हस्तांतरण बिक्रियां माना गया है क्योंकि अंततः उत्पाद निर्यात के लिए निर्धारित है और ऐसे सौदों पर कोई कर (वैट) देय नहीं है। एच डब्ल्यू सी भारतीय ग्राहकों के साथ कीमतें तय करता है। चूंकि एच डब्ल्यू सी और भारतीय ग्राहकों के बीच बिक्री की शर्त "सी आई एफ" है इसलिए समुद्री भाड़ा, प्रहस्तन आदि जैसे अन्य सभी प्रत्यक्ष बिक्री खर्च एच डब्ल्यू सी द्वारा वहन किए जाते हैं। भारतीय ग्राहकों को प्रस्तुत ऋण अवधि पूर्णतः एच डब्ल्यू सी के विवेक पर है और इससे उत्पन्न कोई अवसर लागत एच डब्ल्यू सी द्वारा अपने मार्जिन से वहन की जाती है।

42. भारत की भारित औसत सी आई एफ कीमत \*\*\*\*\* अमरीकी डॉलर प्रति मी. टन है। भारत के निर्यातों की कारखाना बाह्य कीमत का आकलन करने के लिए भारतीय ग्राहकों को एच डब्ल्यू सी की कीमतें मूल कीमत के रूप में स्वीकार की गई हैं। समुद्री भाड़े, प्रहस्तन प्रभार, एजेंट का कमीशन, बीमा सहित अन्य ऋण, एच डब्ल्यू सी का मार्जिन और अंतर्देशीय भाड़ा जैसे एफ ओ बी के पश्चात एच डब्ल्यू सी द्वारा किए गए सभी प्रत्यक्ष खर्च टीएसपीसी द्वारा वहन किए गए थे (क्योंकि टीएसपीसी उत्पाद को एच डब्ल्यू सी को एफ ओ बी शर्तों पर प्रस्तुत करता है) और इन्हें कारखाना बाह्य कीमत की गणना करने के लिए कम कर दिया गया है। निर्यातक के अपने आंकड़ों के अनुसार कारखाना बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत \*\*\*\*\* अमरीकी डा. प्रति मी. टन परिकल्पित की गई है।

## ग. समायोजन

43. करार के अनुच्छेद 2.4 में यह व्यवस्था है कि

"निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना की जाएगी। यह तुलना व्यापार के उसी स्तर, सामान्यतः कारखाना बाह्य स्तर पर की जाएगी और उसी समय पर यथासंभव की गई बिक्रियों के संबंध में होगी। प्रत्येक मामले में उचित अनुमति उन अंतरों के लिए उसके गुणावगुण के आधार पर दी जाएगी जिससे बिक्रियों, कराधान, व्यापार के स्तरों, मात्राओं, भौतिक विशेषताओं और कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने वाले अन्य अंतरों सहित कीमत तुलनीयता का प्रभावित करते हैं।"

44. यह नोट किया जाए कि एच डब्ल्यू सी द्वारा सूचित निर्यात सौदा कीमतें भारत में वास्तविक ग्राहकों के लिए खुदरा स्तर की है परंतु टी एस पी सी की घरेलू बिक्रियां मुख्य व्यापारिक कंपनियों को थोक स्तर पर की जाती हैं। इसलिए सौदे व्यापार के उसी स्तर पर नहीं हैं जिनमें करार के अनुच्छेद 2.4 के अनुसार निर्यात कीमत के साथ उचित तुलना के प्रयोजनार्थ निवल कारखाना बाह्य स्तर पर पहुंचने के लिए व्यापार समायोजनों के स्तर की आवश्यकता है।

45. यह भी देखा गया है कि एफ ओ बी स्तर (निर्यात के पत्तन पर) तक सी आई एफ भारतीय पत्तन तक टी एस पी सी से वस्तुओं के हस्तांतरण के पश्चात हन्वा द्वारा वहन किए गए प्रत्यक्ष खर्च अप्रत्यक्ष बिक्री के लिए गणना में शामिल किए गए हैं परंतु एच डब्ल्यू सी द्वारा किए गए सामान्य एवं प्रशासनिक खर्च और इस उत्पाद के निर्यात में उसका लाभ मार्जिन गणना में शामिल नहीं किए गए हैं। कंपनी ने यह दावा किया था कि ये खर्च अत्यधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं क्योंकि मात्रा कम है और उन्होंने इस उत्पाद के प्रहस्तन के लिए कोई अन्य व्यवसाय नहीं किया हुआ है जिसके लिए एस जी ए खर्चों की गणना की जा सके। यह तर्क दिया गया था कि ये मामूली खर्च उनके मार्जिन से वहन किए जाने हैं जो प्रत्येक निर्यात सौदे के लिए सूचित किया गया है। तथापि सभी प्रत्यक्ष खर्चों को गणना में लेने के पश्चात हन्वा का मार्जिन \*\*\*\*\*% से कम है। निर्यातक ने यह तर्क दिया है कि यह उत्पाद इसके सकल व्यवसाय की बहुत मामूली मात्रा है इसलिए वे इस उत्पाद पर बहुत ही कम लाभ पर कार्य करते हैं।

46. तथापि, एच डब्ल्यू सी के तुलन पत्र की जांच से यह मालूम होता है कि कंपनी द्वारा अपने व्यवसाय कार्य पर खर्च किए गए अप्रत्यक्ष बिक्री खर्च इसके सकल कारोबार का \*\*\*\*\*% परकलित किए गए थे जबकि भारत को इसके निर्यात सौदे में कंपनी का निवल मार्जिन प्रत्यक्ष खर्चों की गणना करने के पश्चात बिक्री मूल्य के \*\*\*\*\*% से कम है। इसलिए बिक्री मूल्य के \*\*\*\*\*% के उसी अनुपात पर अप्रत्यक्ष बिक्री खर्चों को समायोजित करने के लिए यह उचित है और उचित लाभ मार्जिन के लिए अनुमति भी देता है।

47. अप्रत्यक्ष बिक्री और सामान्य खर्चों के लिए समायोजन करने के पश्चात भारत को निर्यात सौदों पर व्यापारिक कंपनी का निवल मार्जिन नकारात्मक हो जाता है। इसलिए निर्यात के देश में इसके सामान्य मूल्य के साथ तुलना करने के लिए निवल कारखाना बाह्य कीमत की गणना करने के लिए उचित लाभ की एक राशि का समायोजन करना उचित है। जहाँ तक उचित लाभ मार्जिन का संबंध है समनुरूपी अवधि के लिए एच डब्ल्यू सी के तुलन पत्र में यह मालूम होता है कि 2003

के लिए कंपनी का निवल लाभ बिक्री मूल्यों का \*\*\*\*\*% था । इसलिए भारत को बिक्री कीमत पर \*\*\*\*\*% की एक राशि ए डी ए के अनुच्छेद 2.4 के अनुसार कारखाना बाह्य स्तर पर निवल निर्यात कीमत की गणना करने के लिए हन्वा के उचित लाभ मार्जिन के लिए समायोजित की गई है ।

48. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि चूंकि निर्यातक, जापानी कंपनी की एक सहायक कंपनी है, जिसने इस संयंत्र में एक बड़ा निवेश किया है, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि निर्यातक इसके एवज में उसे कमीशन का भुगतान कर रहा है । अतः भारत हेतु उसके निर्यात कीमत के संबंध में एक उचित कीमत समायोजन किया जाना चाहिए । परंतु इस तर्क के समर्थन में घरेलू उद्योगों द्वारा किसी प्रकार के सत्यापन योग्य साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए गए हैं । तथापि, यह नोट किया जा सकता है कि यदि इस प्रकार का समायोजन आवश्यक है, तो उसे सभी घरेलू बिक्रियों सहित टी एस पी सी की बिक्रियों के सभी सौदों पर लागू किया जाएगा और समायोजन के निवल प्रभाव को निष्प्रभावी कर दिया जाएगा । अतः इस प्रकार का कोई समायोजन उचित नहीं है ।

49. प्रकटन विवरण के बाद अपने अनुरोध में घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि दोनों ही कंपनी अर्थात् हन्वा कॉर्पोरेशन (एच डब्ल्यू सी) और हन्वा केमिकल कॉर्पोरेशन (एच सी सी) के खर्चों पर उत्पादों की हैंडलिंग में समायोजन हेतु उनके वार्षिक लेखों के आधार पर विचार करना होगा । घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि हन्वा केमिकल कॉर्पोरेशन (एच सी सी) जिसका कार्यालय नई दिल्ली में है, भारत में एच डब्ल्यू सी की सोडियम साइनाइड की बिक्री करने वाला एजेंट है । यह तर्क दिया गया है कि एक पृथक कंपनी होने के नाते एच सी सी के खर्चों को हिसाब में लिया जाना चाहिए । प्राधिकारी नोट करते हैं कि हन्वा कॉर्पोरेशन की वार्षिक रिपोर्ट से यह पता चलता है कि हन्वा केमिकल कॉर्पोरेशन 25% की इक्विटी भागीदारी के साथ हन्वा कॉर्पोरेशन की एक संबद्ध कंपनी है । तथापि, भारत को की गई बिक्रियों से संबंधित निर्यात दस्तावेजों से टी एस पी सी- एच डब्ल्यू सी और भारत में क्रेताओं के बीच सौदों में एच सी सी की कोई प्रत्यक्ष भागीदारी प्रदर्शित नहीं होती है । भारत के क्रेताओं ने सीधे हन्वा कॉर्पोरेशन को ऑर्डर प्रस्तुत किए और क्रेता के लिए हन्वा कॉर्पोरेशन ने निर्यात बीजक भी जारी किए थे । न तो एच सी सी, कोरिया और न ही दिल्ली स्थित एच सी सी के संपर्क कार्यालय की एच डब्ल्यू सी एवं क्रेता के बीच बिचौलिये के रूप में कोई खास भूमिका प्रतीत नहीं होती है जिसके लिए घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए तर्क के अनुसार किसी समायोजन की जरूरत है । अतः प्राधिकारी का यह मत है कि करार के अनुच्छेद 2.4 के अनुसार इसके लिए अलग से कोई समायोजन नहीं किया जा सकता ।

50. मै. टी एस पी- एच डब्ल्यू सी ने प्रकटन विवरण के बाद अपने अनुरोध में यह तर्क दिया है कि एस जी ए के लिए समायोजन तथा प्राधिकारी द्वारा स्वीकृत लाभ मार्जिन स्वैच्छिक है और इसमें विवेक का उपयोग नहीं किया गया है । उन्होंने यह तर्क दिया है कि हन्वा कॉर्पोरेशन एक प्रमुख विनिर्माता कंपनी और व्यापार कार्यकलाप उसके कार्यकलापों के अत्यंत कम अनुपात में है । अतः विनिर्माण क्रियाकलापों के संबंध में मार्जिन एवं एस जी ए खर्चों को व्यापार कार्यकलाप हेतु स्वीकृत नहीं किया जा सकता और प्राधिकारी किसी कंपनी द्वारा अपने व्यापारिक कार्यकलापों से अर्जित मूलभूत मार्जिन को समझने में विफल रहे हैं । उन्होंने यह तर्क दिया है कि व्यापारिक कार्यकलापों में कोई भंडारण, स्थानीय परिवहन, विज्ञापन, कर, आपूर्ति, बाजार विकास संबंधी व्यय आदि शामिल नहीं होते हैं और किए गए सभी प्रत्यक्ष खर्चों का उनके अनुरोधों में विधिवत उल्लेख किया गया है । जहाँ तक लाभ संबंधी समायोजनों का प्रश्न है निर्यातक ने यह तर्क दिया है कि प्राधिकारी ने व्यापारिक कंपनी के लिए लाभ मार्जिन की गणना करने के लिए गैर प्रचालनात्मक आय और व्यय को हिसाब में लेने में त्रुटि की है । चूंकि व्यापारिक कंपनी व्यापारिक कार्यकलाप में कोई पूंजी नहीं

लगाती है इसलिए हन्वा की अंतर्ग्रस्त लागत लगभग शून्य है और ऐसे सौदों में प्रत्यक्ष रूप से जो भी खर्च किया गया है उसे हिसाब में लिया जा चुका है।

51. प्राधिकारी द्वारा इन मुद्दों की जांच की गई है और यह नोट किया जाता है कि हालांकि निर्यातक के अनुरोध में प्रत्यक्ष व्यय को हिसाब में लिया गया है तथापि उसके व्यापारिक कार्यकलापों और किए गए व्यय तथा अर्जित लाभ के बारे में कंपनी की वार्षिक रिपोर्टों में अलग से कोई उल्लेख नहीं किया गया है। अतः उपलब्ध एकमात्र विकल्प यह था कि कंपनियों के समग्र कारोबार के आधार पर अप्रत्यक्ष एसजीए एवं लाभ मार्जिन को स्वीकार किया जाए। उपर्युक्त का ध्यान में रखते हुए निर्यातक के तर्कों को स्वीकार नहीं नहीं किया जा सकता।

52. तदनुसार, इस निर्यातक- उत्पादक संयोजन के लिए समायोजित निवल कारखाना बाह्य निर्यात कीमत \*\*\*\*\* अम. डॉ. प्रति मी. टन बनती है।

#### (घ) पाटन मार्जिन

53. कारखाना बाह्य स्तर पर भारित औसत सामान्य मूल्य की तुलना, कारखाना बाह्य स्तर पर समायोजित भारित औसत सामान्य मूल्य से की गई है तथा पाटन मार्जिन निम्नानुसार बनता है :

| अम. डॉ. प्रति मी. टन | भारत को बिक्री कीमत | समायोजन | निवल कारखाना बाह्य निर्यात कीमत | निवल कारखाना बाह्य सामान्य मूल्य | पाटन मार्जिन | %     |
|----------------------|---------------------|---------|---------------------------------|----------------------------------|--------------|-------|
|                      | *****               | *****   | *****                           | *****                            | *****        | 3.71% |

#### छ.4.1.2. कोरिया गणराज्य से अन्य निर्यातक

54. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया गणराज्य में पर्याप्त क्षमता और उत्पादन मात्रा वाले संबद्ध वस्तुओं के अन्य प्रमुख उत्पादक हैं, जिन्होंने इस जांच में हिस्सा नहीं लिया है। कोरिया गणराज्य के असहयोगी निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान उपलब्ध सर्वोत्तम तथ्यों के आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है। इसके प्रयोजनार्थ घरेलू बाजार में सहयोगी निर्यातक का उच्चतम सौदा मूल्य तथा संबद्ध देश से भारत को होने वाले निर्यातों के न्यूनतम सौदा मूल्य को अपनाया गया है तथा पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए उपलब्ध तथ्यों के आधार पर व्यापार समायोजनों के स्तर को इन सौदा मूल्यों पर निम्नानुसार लागू किया गया है :

अमरीकी डॉ./मी. टन

|                                 |       |
|---------------------------------|-------|
| सामान्य मूल्य                   | ***** |
| निर्यात कीमत                    | ***** |
| सी आई एफ                        | ***** |
| समायोजन                         | ***** |
| निवल कारखाना बाह्य निर्यात कीमत | ***** |
| पाटन मार्जिन                    | ***** |
| पाटन मार्जिन %                  | 38%   |



### छ.4.2. अमरीका

55. डी जी सी आई एस आंकड़ों के अनुसार जांच अवधि के दौरान अमरीका से संबद्ध वस्तु के कोई निर्यात नहीं हुए थे । तथापि, चीनी ताइपेई के खिलाफ एक समानांतर जांच में, उस देश के सहयोगी निर्यातक ने यह सूचना उपलब्ध कराई है कि उनके द्वारा अमरीका से संबद्ध वस्तुओं की पर्याप्त मात्रा (\*\*\*\*\* मी. टन) का आयात एवं भारत को उसका पुनर्निर्यात किया गया है । इस संबंध में करार के अनुच्छेद 2.5 का संदर्भ लिया जा सकता है, जिसके अनुसार :

“ ऐसे मामले में जहाँ उत्पाद उद्गम के देश से सीधे आयात नहीं किए जाते हैं परंतु किसी एक मध्यस्थ देश से आयातक सदस्य को निर्यात किए जाते हैं वहाँ वह कीमत जिस पर आयातक सदस्य को निर्यात के देश से उत्पाद बेचे जाते हैं की सामान्य तौर पर तुलना निर्यात के देश में तुलनीय कीमत से की जाती है । तथापि, उद्गम के देश में कीमत के साथ तुलना की जा सकती है यदि उदाहरणार्थ उत्पाद निर्यात के जरिए केवल यानांतरित किए जाते हैं अथवा ऐसे उत्पाद निर्यात के देश में उत्पादित नहीं किए जाते हैं अथवा उत्पाद के देश में उनके लिए कोई तुलनीय कीमत न हो । ”

56. समानांतर जांच में उत्तर देने वाले निर्यातक ने सूचना दी है कि जांच अवधि के दौरान अमरीका और कोरिया गणराज्य से संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात किया गया था । तथापि, उस देश से पूर्ण असहयोग के कारण अमरीका की बाजार कीमत उपलब्ध नहीं हो सकी है । अतः अमरीका में सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य का परिकलन उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है । तदनुसार, अमरीका में परिकलित सामान्य मूल्य \*\*\*\*\* अम. डॉ. प्रति मी. टन बनता है ।

57. अमरीका के मूल के परंतु ताइपेई के जरिए भारत को निर्यातित सोडियम साइनाईड की भारित औसत सी आई एफ निर्यात कीमत ताईवान के निर्यातक आंकड़ों के अनुसार \*\*\*\*\* अम. डॉ./मी. टन है । चूंकि वस्तुओं का आयात पहले ताईवान को किया गया है तत्पश्चात भारत को उनका निर्यात किया गया है इसलिए सौदे के दोनों स्तरों पर अमरीका से अनुमानित कारखाना बाह्य निवल निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए अंतर्देशीय भाड़ा एवं बीमा, समुद्री भाड़ा एवं बीमा, कमीशन तथा अन्य प्रहस्तन प्रभार हेतु इस कीमत पर समायोजन किया गया है । तदनुसार, अमरीकी निर्यातकों के लिए कारखाना बाह्य निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन निम्नानुसार बनता है :

|                                 |       |
|---------------------------------|-------|
| सी आई एफ                        | ***** |
| समायोजन                         | ***** |
| कमीशन                           | ***** |
| निवल कारखाना बाह्य निर्यात कीमत | ***** |
| सामान्य मूल्य                   | ***** |
| पाटन मार्जिन                    | ***** |
| पाटन मार्जिन %                  | 79%   |

**छ.4.3. यूरोपीय संघ**

58. घरेलू उद्योग ने अपने प्रकटन विवरण के बाद के अनुरोध में यह ध्यान दिलाया कि ई यू से आयातित पोटेशियम साइनाइड के कुछेक सौदों को डीजीसीआईएंडएस के सौदेवार आंकड़ों में शामिल किया गया है और इस प्रकार ई यू से सीआईएफ मूल्य और आयातों का पहुँच मूल्य बढ़ा हुआ है। डीजीसीआईएंडएस के सौदा स्तर के आंकड़ों की जांच से यह पता चलता है कि अधिक प्रति इकाई वसूली वाले पोटेशियम साइनाइड के कुछेक सौदों को आंकड़ों में शामिल किया गया है। तदनुसार, आंकड़ों में सुधार किया गया है और ज्ञात किए गए ब्यौरे इस प्रकार हैं।

|      | कुल मात्रा मी. टन | कुल सीआईएफ मूल्य रूपए | सीआईएफ कीमत रूपए/मी. टन | पहुँच मूल्य रूपए/मी. टन |
|------|-------------------|-----------------------|-------------------------|-------------------------|
| ई यू | 105.40            | 6501868               | 61687                   | 77880                   |

59. तदनुसार, डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों के आधार पर ई यू के निर्यातकों के बीच पाटन मार्जिन की गणना में संशोधन किया गया है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर समायोजन निम्नानुसार है :-

| अम. डा./मी. टन              |          |
|-----------------------------|----------|
| सीआईएफ                      | 1332.325 |
| समायोजन                     | 154.52   |
| कमीशन                       | 39.97    |
| निवल कारखानागत निर्यात कीमत | 1137.83  |
| सामान्य मूल्य               | 1124     |
| पाटन मार्जिन                | -13.83   |
| पाटन मार्जिन %              | -1%      |

ई यू के निर्यातकों के संबंध में पाटन मार्जिन का निर्धारण ऋणात्मक है।

**छ. 5 पाटन मार्जिन तालिका**

|               | टी एस पी सी एंड एच डब्ल्यू सी | कोरिया गणराज्य से अन्य | अमरीका | ई यू  |
|---------------|-------------------------------|------------------------|--------|-------|
| सामान्य मूल्य | *****                         | *****                  | *****  | ***** |
| निर्यात कीमत  | *****                         | *****                  | *****  | ***** |
| पाटन मार्जिन  | *****                         | *****                  | *****  | शून्य |
| %             | 3.71%                         | 38%                    | 79%    |       |

**छ.6 पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना**

60. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि पाटन की वर्तमान स्थिति निर्णायक समीक्षा जांच में शुल्क को लागू रखने की आवश्यकता के निर्धारण के लिए एकमात्र मापदण्ड नहीं है। करार के अंतर्गत शुल्क को वापस लेने की स्थिति में पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की जांच करना अपेक्षित है। जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटन के वर्तमान परिदृश्य की जांच करने के साथ, प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के विरुद्ध लगाए गए शुल्क की समाप्ति की स्थिति में पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की भी जांच की है।

61. वर्तमान पाटन जांच से यह संकेत मिलता है कि कोरिया गणराज्य से पाटन जारी है। टी एस पी सी की क्षमता लगभग \*\*\*\* मी.टन प्रति वर्ष है जबकि उत्पादन लगभग \*\*\*\* मी. टन है। इसलिए उनके पास काफी अतिरिक्त क्षमता है और भारत को इस निर्यातक की व्यापार मात्रा में क्षति जांच अवधि के दौरान काफी वृद्धि हुई है। अतः इस बात की संभावना है कि इस देश से पाटन जारी रहेगा।

62. जहाँ तक यूरोपीय संघ का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान उस क्षेत्र से काफी कम निर्यात हुआ है। ई यू के एक निर्यातक ने अपने संक्षिप्त अनुरोध में यह तर्क दिया है कि उनके निर्यात अपेक्षाकृत अधिक शुद्धता वाले हैं और ये भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग के उत्पादों के साथ प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं। यह भी नोट किया जाता है कि वह कीमत जिस पर ई यू से वस्तुओं का निर्यात किया गया है, निर्धारित संदर्भ कीमत से काफी अधिक है। अतः ई यू से निर्यात की मात्रा और कीमत को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि यदि शुल्क समाप्त किया जाता है तो ई यू से पाटन की पुनरावृत्ति होने की कोई निकट संभावना नहीं है।

63. जहाँ तक अमरीका का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वर्ष 2001-02 में निर्यातित काफी कम मात्रा को छोड़कर जांच अवधि के दौरान अमरीका से संबद्ध वस्तु के कोई प्रत्यक्ष निर्यात नहीं हुए हैं। तथापि, प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान अमरीका में उद्भूत संबद्ध वस्तु का चीनी ताइपेई के रास्ते पाटित कीमतों पर काफी मात्रा में भारत में प्रवेश हुआ है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि यदि अमरीका के विरुद्ध शुल्क को हटाया जाता है तो अमरीका से प्रत्यक्ष रूप से पाटन की पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

64. संक्षेप में उपर्युक्त जांच से यह प्रदर्शित होता है कि यद्यपि कोरिया गणराज्य और अमरीका से पाटन जारी है और इस पाटन के जारी रहने की संभावना है, तथापि यूरोपीय संघ से इस समय कोई पाटन नहीं हो रहा है और इस देश से पाटन की पुनरावृत्ति होने की कोई निकट संभावना नहीं है।

#### ज. क्षति संबंधी जांच

65. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उठायी गयी क्षति, यदि कोई हो और पाटित आयातों तथा उठायी गयी क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की जांच की है। प्राधिकारी ने पाटन और क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना की भी जांच की है। क्षति जांच के प्रयोजनार्थ याचिकाकर्ता का कुल घरेलू उत्पादन में प्रमुख हिस्सा है और इस प्रकार नियम 2 ख के अर्थों के भीतर वे घरेलू उद्योग हैं।

#### ज.1 क्षति का जारी रहना: क्षति मानदण्डों और कारणात्मक संबंध की जांच

##### ज.1.1 हितबद्ध पक्षकारों के विचार

66. घरेलू उद्योग ने यह निवेदन किया है कि अनेक स्रोतों से पाटन के कारण उन्हें उपलब्ध कराए गए पाटनरोधी शुल्क के संरक्षण के बावजूद घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी है।

आयातकों, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग ने अपने कार्य निष्पादन में सुधार किया है और इस समय वह कोई क्षति नहीं उठा रहा है तथा यदि कोई क्षति है भी तो वह उनकी अपनी अक्षमता के कारण है और इसलिए इसके लिए इन स्रोतों से आयातों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

### ज. 1.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

67. प्राधिकारी ने विभिन्न पक्षों द्वारा अपने अनुरोधों में उठाये गए विभिन्न मुद्दों को नोट किया है और घरेलू उद्योग को पाटन से क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना के मुद्दे की जांच प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत तर्कों के आलोक में की गयी है।

68. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह पहले से लागू उपाय की निर्णायक समीक्षा है और उन्होंने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (iii) के अनुसार संबद्ध देशों से लगातार पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संचयी आकलन के मुद्दे की जांच की है और यह मानते हैं कि संचयी आकलन के इस मामले में उक्त नियमावली में निर्दिष्ट शर्तों का पालन किया गया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि इस जांच के साथ-साथ चीनी ताइपेई से संबद्ध वस्तुओं के आयात के विरुद्ध एक और जांच चल रही है। तथापि इस जांच के प्रयोजनार्थ कारणात्मक संबंध विश्लेषण के लिए सभी अन्य स्रोतों से आयातों की जांच की गयी है।

69. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है - (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या आयातों में समग्र रूप से या आयातक सदस्य में उत्पादन और खपत की दृष्टि से महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गयी है। पाटित आयातों के कीमत संबंधी प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा महत्वपूर्ण कीमत कटौती की गयी है या अन्यथा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकने के रूप में है जो अन्यथा महत्वपूर्ण स्तर तक बढ़ गयी होती।

70. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के मात्रात्मक एवं कीमत संबंधी प्रभावों की जांच की है और क्षति और पाटन और क्षति, यदि कोई हो, के बीच कारणात्मक संबंध की मौजूदगी की जांच के लिए कीमतों और लाभप्रदता पर इसके प्रभाव की जांच की है।

71. चूंकि कोरिया गणराज्य और अमरीका ने किए गए निर्यातों के लिए धनात्मक पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है, इसलिए इन देशों से होने वाले सभी निर्यातों को क्षति संबंधी विश्लेषण और कारणात्मक संबंध जांच के प्रयोजनार्थ पाटित आयात माना गया है। यूरोपीय संघ से आयात गैर-पाटित कीमतों पर किए गए हैं और इसलिए इन्हें पाटित आयातों की श्रेणी में शामिल नहीं किया गया है।

### ज.1.3 मात्रात्मक प्रभाव

#### पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

72. संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा के प्रभावों तथा अन्य देशों से आयातों की निम्नानुसार जांच की गयी है:-

#### (i) आयात मात्राएं और संबद्ध देशों का हिस्सा

मात्रात्मक विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने संगत अवधियों के लिए डी जी सी आई एण्ड एस के आयात संबंधी आंकड़ों की जांच की है। तथापि यह नोट किया जाता है कि

समानांतर जांचों में अपने उत्तर में सहयोगी निर्यातकों द्वारा दर्शाई गई निर्यात की मात्रा डी जी सी आई एण्ड एस द्वारा बताई गई आयातों की मात्रा से अधिक है। अतः आयात की मात्रा को प्राधिकारी के पास उपलब्ध निर्यात आंकड़ों पर विचार करते हुए समायोजित किया गया है। तदनुसार विचाराधीन उत्पाद के पाटित आयातों की मात्रा का निम्नानुसार अनुमान लगाया गया है:-

मात्रा मी.टन में

|                              | 2000-01  | 2001-02  | 2002-03  | जांच अवधि<br>अप्रैल-दिसम्बर<br>03 | 2003-04 |
|------------------------------|----------|----------|----------|-----------------------------------|---------|
| कोरिया गणराज्य               | 1113.435 | 1437.149 | 1445.635 | 1700                              | 2267    |
| प्रवृत्ति                    | 100      | 129.07   | 129.84   | 152.68                            | 203.57  |
| ई यू                         | 385.888  | 157.9    | 221.486  | 105.4                             | 135.3   |
| अमरीका                       | 0        | 0        | 17.8     | 0                                 | 0       |
| संबद्ध देशों का जोड़         | 1499.323 | 1595.049 | 1684.921 | 1805.4                            | 2401.97 |
| प्रवृत्ति                    | 100      | 106.38   | 112.38   | 120.41                            | 160.20  |
| चाइनिज ताइपेई                | 27       | 18       | 107      | 372.25                            | 539.6   |
| कुल आयात ताइपेई समेत<br>अन्य | 45.15    | 40.325   | 330.384  | 441.91                            | 603.01  |
| प्रवृत्ति                    | 100      | 89.31    | 731.75   | 978.76                            | 1335.57 |
| कुल पाटित आयात               | 1499.32  | 1595.05  | 1684.92  | 1805.40                           | 2401.97 |
| प्रवृत्ति                    | 100      | 106.38   | 112.38   | 120.41                            | 160.20  |
| कुल आयात                     | 1544.473 | 1635.374 | 2015.305 | 2247.31                           | 3004.98 |
| प्रवृत्ति                    | 100      | 105.89   | 130.48   | 145.51                            | 194.56  |

जांच अवधि में चीनी ताइपेई के निर्यातों में अमरीकी मूल के सोडियम सायनाइड के \*\*\*\* मी टन और कोरियाई मूल के सोडियम सायनाइड के \*\*\*\*\* मी टन के निर्यात शामिल हैं।

उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि कोरिया से हुए आयातों में जांच अवधि में 53 प्रतिशत की और आधार वर्ष की तुलना में वार्षिकृत आधार पर 100 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है जबकि संबद्ध देशों से आयात में इसी अवधि के दौरान लगभग 22 प्रतिशत और 60 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ई यू और अमरीका से आयातों में काफी गिरावट आई है यद्यपि इसी अवधि के दौरान कुल आयात में लगभग 46 प्रतिशत और 94 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

(ii) मांग, उत्पादन और बाजार हिस्से

(क) घरेलू उद्योग का उत्पादन

मात्रा मी.टन में

|              | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | जांच अवधि | जांच अवधि<br>वार्षिकीकृत |
|--------------|---------|---------|---------|-----------|--------------------------|
| क्षमता       | *****   | *****   | *****   | *****     | *****                    |
| उत्पादन      | *****   | *****   | *****   | *****     | *****                    |
| सूचीबद्ध     | 100.00  | 79.32   | 96.77   | 83.58     | 83.58                    |
| क्षमता उपयोग | *****   | *****   | *****   | *****     | *****                    |
| सूचीबद्ध     | 100     | 79      | 96      | 83        | 83                       |

उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 2002-03 में कुछ सुधार होने के बाद काफी गिरावट आई है। संबद्ध देशों के विरुद्ध पटनरोधी शुल्क के संरक्षण के बावजूद उत्पादन और क्षमता उपयोग में गिरावट काफी अधिक और वास्तविक है।

प्राधिकारी ने घरेलू बाजार में मांग और घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की बिक्री की क्षमता के संदर्भ में उत्पादन की जांच की है, जिसे नीचे दर्शाया गया है:-

### (ख) घरेलू उद्योग की बिक्री

मात्रा मी. टन में

|                       | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | जांच अवधि | जांच अवधि वार्षिकीकृत |
|-----------------------|---------|---------|---------|-----------|-----------------------|
| बिक्रियां - (घरेलू)   | *****   | *****   | *****   | *****     | *****                 |
| प्रवृत्ति             | 100.00  | 109.47  | 107.24  | 110.05    | 110.04                |
| बिक्रियां - (निर्यात) | *****   | *****   | *****   | *****     | *****                 |
| प्रवृत्ति             | 100.00  | 175.15  | 224.85  | 277.17    | 277.17                |
| बिक्रियां - (कुल)     | *****   | *****   | *****   | *****     | *****                 |
| प्रवृत्ति             | 100.00  | 116.95  | 120.63  | 129.06    | 129.06                |

उपर्युक्त आंकड़ों से प्रदर्शित होता है कि यद्यपि उत्पादन में 26% की गिरावट आई, तथापि घरेलू बिक्री में 10% की वृद्धि हुई है, हालांकि बिक्री में सबसे बड़ी वृद्धि निर्यात क्षेत्र में हुई है, जिसमें 177% की वृद्धि दर्ज की गई है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि घरेलू बाजार में पाटित आयातों के परिणामस्वरूप चल रही अलाभकारी कीमत के कारण उन्हें निर्यातों में वृद्धि करने के लिए बाध्य होना पड़ा है।

### (ग) मांग एवं बाजार हिस्सा

मात्रा मी. टन में

|                                    | 2000-01  | 2001-02  | 2002-03  | जांच अवधि अप्रैल-दिसम्बर, 03 | 2003-04 |
|------------------------------------|----------|----------|----------|------------------------------|---------|
| कुल आयात                           | 1544.473 | 1635.374 | 2015.305 | 2247.31                      | 3004.98 |
| प्रवृत्ति                          | 100      | 105.89   | 130.48   | 145.51                       | 194.56  |
| घरेलू उद्योग की बिक्री             | *****    | *****    | *****    | ***                          | ***     |
| प्रवृत्ति                          | 100      | 109.47   | 107.24   | 82.54                        | 110.04  |
| अन्य घरेलू उत्पादकों द्वारा बिक्री | *****    | *****    | *****    | ***                          | ***     |
| प्रवृत्ति                          | 100      | 66.84    | 107.62   | 92.53                        | 123.39  |
| कुल घरेलू मांग                     | 7407.47  | 7237.37  | 8310.30  | 7287.31                      | 9724.97 |
| प्रवृत्ति                          | 100      | 97.70    | 112.19   | 98.38                        | 131.29  |
| मांग में हिस्सा                    |          |          |          |                              |         |
| घरेलू उद्योग                       | *****    | *****    | *****    | *****                        | *****   |
| प्रवृत्ति                          | 100      | 112.04   | 95.59    | 83.90                        | 83.82   |

| अन्य घरेलू उत्पादक | *****  | *****  | *****  | *****  | *****   |
|--------------------|--------|--------|--------|--------|---------|
| प्रवृत्ति          | 100    | 70.46  | 95.92  | 94.06  | 93.99   |
| कोरिया गण.         | 15.03% | 19.86% | 17.40% | 23.33% | 23.31%  |
| प्रवृत्ति          | 100    | 132.11 | 115.73 | 155.20 | 155.06  |
| ईयू                | 5.21%  | 2.18%  | 2.67%  | 1.45%  | 1.39%   |
| प्रवृत्ति          | 100    | 41.88  | 51.16  | 27.76  | 26.71   |
| अमरीका             | 0.00%  | 0.00%  | 0.21%  | 0.00%  | 0.00%   |
| संबद्ध देश         | 20.24% | 22.04% | 20.28% | 24.77% | 24.70%  |
| प्रवृत्ति          | 100    | 108.88 | 100.17 | 122.40 | 122.03  |
| अन्य               | 0.61%  | 0.56%  | 3.98%  | 6.06%  | 6.20%   |
| प्रवृत्ति          | 100    | 91.41  | 652.25 | 994.90 | 1017.30 |

यह नोट किया गया है कि विचाराधीन उत्पाद की घरेलू मांग में वर्ष-दर-वर्ष विश्लेषण के अनुसार आधार वर्ष की तुलना में लगभग 31% की वृद्धि हुई है। तथापि, कुल घरेलू मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है तथापि संबद्ध देशों का हिस्सा काफी अधिक रहा है तथा शुल्क लागू किए जाने के बाद भी समान अवधि में इसमें 4% की वृद्धि हुई है। कोरिया गणराज्य के विरुद्ध शुल्क लागू करने के पश्चात भी उसके पाटित आयातों के हिस्से में काफी वृद्धि हुई है तथापि दोनों अन्य देश, जहाँ शुल्क लागू हैं, के हिस्से में या तो अत्यधिक गिरावट आई है अथवा उनका हिस्सा पूर्णता समाप्त हो गया है। आधार वर्ष की तुलना में अन्य घरेलू उत्पादक के हिस्से में मामूली गिरावट आई है।

#### ज.1.4. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

73. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच, कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत अवमूल्यन एवं कीमत ह्रास के संदर्भ में की गई है।

74. इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ, घरेलू उद्योग के भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री वसूली (एन एस आर) तथा क्षतिरहित कीमत (एन आई पी) (घरेलू उद्योग की लागत संबंधी सूचना को मानकीकृत करके निकाले गए) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच कीमत के साथ की गई है।

#### (i) कीमत कटौती एवं कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव

| रू./कि.ग्रा.             | मूल्य रूपए/मी. टन |         |         |           |
|--------------------------|-------------------|---------|---------|-----------|
|                          | 2000-01           | 2001-02 | 2002-03 | जांच अवधि |
| बनाने एवं बिक्री की लागत | *****             | *****   | *****   | *****     |
| प्रवृत्ति                | 100               | 102.51  | 87.94   | 100.17    |
| बिक्री कीमत              | *****             | *****   | *****   | *****     |
| प्रवृत्ति                | 100               | 94.72   | 91.91   | 86.85     |

| पहुँच<br>(पाटनरोधी<br>के बिना) | मूल्य<br>शुल्क |        |       |           |  |
|--------------------------------|----------------|--------|-------|-----------|--|
| कोरिया गणराज्य                 | 67317          | 63225  | 66429 | 55642     |  |
| ई यू                           | 102941         | 167493 | 80120 | 77880     |  |
| अमरीका                         | 0              | 0      | 60166 | 49744     |  |
| कीमत कटौती                     |                |        |       |           |  |
| कोरिया गणराज्य                 |                |        |       | 0 से 10%  |  |
| ई यू                           |                |        |       | शून्य     |  |
| अमरीका                         |                |        |       | 10 से 20% |  |
| क्षतिरहित कीमत                 |                |        |       | *****     |  |
| कम कीमत पर<br>बिक्री           |                |        |       |           |  |
| कोरिया गणराज्य                 |                |        |       | 5 से 15%  |  |
| ई यू                           |                |        |       | नकारात्मक |  |
| अमरीका                         |                |        |       | 10 से 20% |  |

घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत (निवल बिक्री प्राप्ति) में काफी गिरावट आई है, जबकि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में वर्ष 2002-03 में अत्यधिक गिरावट के पश्चात जांच अवधि में वृद्धि हुई है। समग्र जांच अवधि में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के भारित औसत पहुँच मूल्य की उसी अवधि के लिए घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री वसूली से तुलना करके कीमत कटौती का निर्धारण किया गया है। इसके प्रयोजनार्थ आयातों के पहुँच मूल्य का परिकलन संबद्ध देशों से आयात कीमतों संबंधी डीजीसीआईएस सौदावार आंकड़ों में सूचित मूल्य में 1% प्रहस्तन प्रभार तथा लागू आधारभूत सीमाशुल्क जोड़कर किया गया है।

कीमत कटौती (लागू पाटनरोधी शुल्क पर विचार किए बिना) सकारात्मक है। यह भी नोट किया गया है जहाँ तक कोरिया गणराज्य का संबंध है निर्यात का प्रमुख हिस्सा मै. टोंग शूह तथा मै. हन्वा से प्राप्त होता है, जिन पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया गया है। अतः इस देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू कीमतों पर अत्यधिक कीमत कटौतीकारी प्रभाव पड़ा है। जहाँ तक यूरोपीय संघ का संबंध है, वहाँ से आयातित संबंध वस्तुओं का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की कीमतों से काफी अधिक है, जिससे यह संकेत मिलता है कि किसी प्रकार की कीमत कटौती नहीं हुई है अथवा कम कीमत पर बिक्री का कोई प्रभाव मौजूद नहीं है।

जहाँ तक अमरीका का संबंध है, इस तथ्य का देखते हुए कि वस्तुओं का निर्यात चीनी ताइपेई के जरिए किया जा रहा है यद्यपि उस देश से संबद्ध वस्तुओं का कोई प्रत्यक्ष निर्यात नहीं हुआ है। तथापि, कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के प्रयोजनार्थ उस देश की वस्तुओं के पहुँच मूल्य की तुलना की गई है। पाया गया है कि इन निर्यातों के कारण अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री हो रही है।

#### (ii) पाटित आयातों के कीमत अवमूल्यन एवं कीमत ह्रासकारी प्रभव

पाटित आयातों के कीमत अवमूल्यनकारी प्रभाव की जांच, उत्पादन लागत, निवल बिक्री वसूली तथा संबद्ध देशों से पहुँच मूल्यों के संदर्भ में भी की गई है।



उपर्युक्त सारणी से यह प्रदर्शित होता है कि कोरिया एवं अमरीका से वस्तुओं के पहुँच मूल्य में आधार वर्ष की तुलना में अत्यधिक गिरावट आई है। संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन लागत में आधार वर्ष की तुलना में पर्याप्त वृद्धि प्रदर्शित हुई है। परंतु उसी अवधि के दौरान बिक्री कीमत में गिरावट प्रदर्शित हुई है।

#### ज.1.5. अन्य क्षति मानदंडों की जांच

75. घरेलू उद्योग की मात्रा एवं कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा मात्रा तथा आयातों के मूल्य, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा घरेलू उद्योग की बिक्री तथा मांग की प्रवृत्ति तथा पूर्व में विभिन्न क्षेत्रों के बाजार हिस्सों जैसे क्षति के प्रमुख संकेतकों की जांच करने के पश्चात ऐसे अन्य आर्थिक मानदण्डों, जिनसे घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति की मौजूदगी का संकेत मिलता है, का विश्लेषण निम्नानुसार है :

##### (i) उत्पादकता

| रू./कि.ग्रा.             | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | जांच अवधि |
|--------------------------|---------|---------|---------|-----------|
| उत्पादकता प्रति दिन      | *****   | *****   | *****   | *****     |
| प्रवृत्ति                | 100     | 79.32   | 96.77   | 83.57     |
| उत्पादकता प्रति कर्मचारी | *****   | *****   | *****   | *****     |
| प्रवृत्ति                | 100     | 80.50   | 101.74  | 89.70     |

घरेलू उद्योग की उत्पादकता, जिसे उत्पादन में मजदूरों की उत्पादकता के संदर्भ में मापा जाता है, में जांच अवधि के दौरान कुल उत्पादन में गिरावट के कारण कमी आई है।

##### (ii) लाभ एवं नकद प्रभाव पर वास्तविक और संभावित प्रभाव

प्राधिकारी ने शामिल उत्पाद तथा प्रमुख कच्ची सामग्री अर्थात् कृत्रिम प्रसंस्करण के द्वारा उत्पादित एच सी एन हेतु अपने लागत रिकॉर्डों के आधार पर घरेलू उद्योग के उत्पादन लागत की जांच की है। बिक्री वसूली की जांच भी उनके बिक्री रिकॉर्डों के आधार पर की गई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकार ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग के पास बड़ी मात्रा में कम गुणवत्ता वाली बिक्री सामग्री है अतः उनकी वास्तविक बिक्री वसूली उनके दावों की तुलना में काफी अधिक होगी। कंपनी के बिक्री रिकॉर्डों के आधार पर इस पहल की भी जांच की गई और यह पाया गया कि कंपनी द्वारा जांच अवधि के दौरान कुछेक विशिष्ट ग्राहकों को लगभग \*\*\* मी. टन (\*\*\*\*%) कम गुणवत्ता वाली सामग्री की बिक्री की गई थी। याचिकाकर्ता ने स्पष्ट किया है कि बिक्री कुछेक ग्राहकों की विशिष्ट अपेक्षाओं के अनुसार की गई थी। तथापि, बेची गई कम गुणवत्ता वाली सामग्री, सभी मूलभूत विशेषताओं में विचाराधीन उत्पाद के समान है। अतः उत्पादन लागत तथा निवल बिक्री वसूली का निर्धारण औसत आधार पर किया गया है।

| रू./मी. टन   | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | जांच की अवधि<br>वार्षिक |
|--------------|---------|---------|---------|-------------------------|
| उत्पादन लागत | *****   | *****   | *****   | *****                   |
| प्रवृत्ति    | 100     | 104.75  | 89.13   | 102.34                  |
| बिक्री कीमत  | *****   | *****   | *****   | *****                   |
| प्रवृत्ति    | 100     | 95.92   | 92.79   | 88.01                   |
| लाभ/घाटा     | *****   | *****   | *****   | *****                   |
| प्रवृत्ति    | 100     | 95.92   | 92.79   | 88.01                   |

यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में वर्ष 2002-03 में अत्यधिक गिरावट के पश्चात उर्ध्वगामी प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग की बिक्री वसूली में निरंतर गिरावट आ रही है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लाभ मार्जिन में गिरावट आई है यद्यपि जांच अवधि के दौरान उद्योग अपने घरेलू प्रचालन के माध्यम से लाभ अर्जित करता रहा है। आधार वर्ष की तुलना में लाभ मार्जिन में 65% से अधिक की गिरावट आई है।

### (iii) रोजगार एवं वेतन

घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में गिरावट आई है। तथापि, वेतन एवं मजदूरी के कारण व्यय में लगभग 14% की वृद्धि हुई है। तथापि, वेतन एवं मजदूरी के कारण व्यय में हुई वृद्धि, तुलनीय अवधियों के दौरान देश में प्रचलित नियमों एवं विनियमों के अनुरूप थी।

| रू./कि.ग्रा. | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | जांच की अवधि<br>वार्षिक |
|--------------|---------|---------|---------|-------------------------|
| रोजगार       | *****   | *****   | *****   | *****                   |
| प्रवृत्ति    | 100.00  | 98.54   | 95.12   | 93.17                   |
| वेतन         | *****   | *****   | *****   | *****                   |
| प्रवृत्ति    | 100.00  | 93.58   | 107.20  | 114.35                  |

### (iv) निवेश पर आय तथा पूंजी एकत्र करने की क्षमता

घरेलू उद्योग द्वारा लगाई गई पूंजी पर प्राप्त आय में आधार वर्ष एवं पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में गिरावट प्रदर्शित हुई है।

| रू./मी. टन  | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | जांच की अवधि<br>वार्षिक |
|-------------|---------|---------|---------|-------------------------|
| पी बी आई टी | *****   | *****   | *****   | *****                   |

|                               |        |        |        |       |
|-------------------------------|--------|--------|--------|-------|
| घरेलू बिक्री पर लगाई गई पूंजी | *****  | *****  | *****  | ***** |
| लगाई गई पूंजी पर आय           | 36.68% | 19.60% | 29.97% | 9.93% |
| प्रवृत्ति                     | 100    | 53.45  | 81.7   | 27.07 |

उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की लगाई गई पूंजी पर आय में अत्यधिक गिरावट आई ।

v) निवेश

आवेदकों द्वारा जांच अवधि के दौरान कोई क्षमता वृद्धि अथवा नया निवेश नहीं किया गया है ।

vi) पाटन की मात्रा

पाटन की मात्रा, इस बात के संकेतक के रूप में कि किस सीमा तक पाटित आयात घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा सकते हैं, यह दर्शाती है कि कोरिया जन.गण. तथा यूएसए के विरुद्ध निर्धारित पाटन मार्जिन जांच अवधि के लिए वास्तविक है जबकि पाटनरोधी शुल्क लागू है ।

vii) कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

पाटित आयातों से इतर कारकों का विश्लेषण करने के लिए लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा तथा अन्य स्रोतों की कीमतों की जांच की गई जिनसे घरेलू बाजार में कीमतें प्रभावित हो सकती हैं । इस उत्पाद का कोई व्यवहार्य प्रतिस्थापन नहीं है । मै0 साइनाइड एंड केमिकल्स भारत में संबद्ध वस्तु का सबसे बड़ा उत्पादक है । मै0 गुजरात अल्केलीज एंड केमिकल्स लि0 भारत में संबद्ध वस्तु का अन्य उत्पादक है । हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि याचिकाकर्ता की कीमतें जीएसीएल की कीमत से प्रभावित होती है जिसकी उत्पादन की लागत, इस बात के मद्देनजर कि जीएसीएल, एचसीएन उत्पादों का उपयोग करता है तथा इसकी आईपीसीएल द्वारा अपने एसीएन संयंत्र द्वारा सह-उत्पाद के रूप में आपूर्ति की जाती है, याचिकाकर्ता की लागत की तुलना में काफी कम है । प्राधिकारी का मत है कि जीएसीएल ने भी याचिका का समर्थन किया है तथा यह प्रस्तुत किया है कि वे संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण उचित कीमत वसूल करने में असमर्थ हैं । तथापि, जीएसीएल की क्षमता सीमित है तथा याचिकाकर्ता ने यह तर्क दिया है कि घरेलू बाजार में उनके बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा है ।

viii) माल सूचियाँ

| रू0/किग्रा.                        | 2000-2001 | 2001-2002 | 2002-2003 | जांच अवधि वार्षिक |
|------------------------------------|-----------|-----------|-----------|-------------------|
| माल सूचियाँ                        | *****     | *****     | *****     | *****             |
| बिक्री के % के रूप में माल सूचियाँ | 46.86     | 25.12     | 27.37     | 11.93             |

आंकड़ों से यह प्रदर्शित है कि घरेलू उद्योग पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने के बाद माल सूचियों को परिसमाप्त करने में समर्थ है ।

**ज.2 अन्य ज्ञात कारक तथा कारणात्मक संबंध**

76. प्राधिकारी के समक्ष गैर-आरोपण संबंधी विश्लेषण के लिए निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं।

**i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा तथा कीमतें**

जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से इतर चीनी ताइपेई से अत्यधिक आयात हुए हैं। तथापि, चीनी ताइपेई से आयात प्राधिकारी द्वारा जांच किए जाने के अन्तर्गत हैं। प्राधिकारी का यह भी मत है कि इस देश से आयात वास्तव में समीक्षा जांच में जांच किए गए देशों के मूल के हैं। ताइवान एवं संबद्ध देशों से इतर देशों से आयात या तो मात्रा में कम हैं या उनकी कीमतें उच्चतर हैं। प्राधिकारी का यह मत है कि संबद्ध देशों से पादित आयात कुल आयातों का 80% बनाते हैं और अन्य सभी स्रोतों से आयात शेष 20% है। इस 20% में चीनी ताइपेई से आयातों का 90% भाग है। चूंकि चीनी ताइपेई से आयात वास्तविक रूप से संबद्ध देश के मूल के हैं इसलिए वास्तविक रूप से संबद्ध देश कुल आयातों का 98% भाग बनाते हैं।

**ii) मांग में संकुचन तथा/अथवा खपत के ढंग में परिवर्तन**

विचाराधीन उत्पाद की कुल घरेलू मांग आधार वर्ष की तुलना में वार्षिक आधार पर अत्यधिक बढ़कर लगभग 29% हो गई। तथापि, वर्ष 2001-2002 में बढ़ने के पश्चात (शुल्क लगाए जाने के बाद) मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में तीव्र गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई दी जबकि संबद्ध देशों का हिस्सा शुल्क लगाने के बावजूद पर्याप्त बना रहा। घरेलू बाजार में उत्पाद की खपत के ढंग में कोई प्रभावी परिवर्तन नहीं हुआ है जिसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण कहा जा सके।

**iii) विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं तथा उनके बीच प्रतिस्पर्धा**

संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है तथा बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं नहीं हैं। जैसा कि पूर्व में वर्णित है, भारत में संबद्ध वस्तु के केवल अन्य उत्पादक भारतीय बाजार में याचिकाकर्ता के साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करते हुए प्रतीत होते हैं। संबद्ध वस्तुओं के एक बड़े भाग का आयात संबद्ध देशों से होता है। अन्य निर्यातक देशों का भारतीय बाजार में प्रभावी रूप से प्रतिस्पर्धा करने के लिए पर्याप्त बाजार हिस्सा नहीं है।

**iv) प्रौद्योगिकी का विकास एवं निर्यात निषादन**

प्राधिकारी का यह मत है कि सोडियम साइनाइड की उत्पादन प्रक्रिया सभी उत्पादक देशों में एक समान है। तथापि मूल कच्चे माल अर्थात् एचसीएन के उत्पादन की प्रक्रिया अलग है। यद्यपि एसीएन उत्पादन सुविधाएं एचसीएन का एसीएन संयंत्र के सह-उत्पाद के रूप में उत्पादन करती हैं तथापि, एचसीएन का एक व्यवहार्य उत्पादन प्रक्रिया के रूप में अजैविक संश्लेषित मार्ग के जरिए व्यापक रूप से उत्पादन किया जाता है। तथापि, इन दोनों तरीकों से उत्पादन की लागत संरचना बिल्कुल अलग-अलग है। यद्यपि मूल कच्चे माल को प्राप्त करने की प्रौद्योगिकी अलग है तथापि, वे व्यवहार्य उत्पादन प्रक्रियाएं हैं तथा इनका विश्वभर में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

मात्रा के रूप में घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन जांच अवधि के दौरान इसके घरेलू निष्पादन से बेहतर पाया गया था। तथापि, उनके निर्यात निष्पादन के आधार पर घरेलू उद्योग के लाभ/हानि को पृथक किया गया है तथा केवल घरेलू प्रचालन के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन का विश्लेषण किया गया है। इसलिए घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन के आधार पर हुई क्षति यदि कोई हो, को पाटित आयातों के कारण नहीं माना गया है।

क्षति संबंधी मापदण्डों तथा गैर-आरोपण कारकों का उपर्युक्त विश्लेषण यह इंगित करता है कि पाटित आयातों से इतर किसी अन्य कारक के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

### ज.3 क्षति एवं कारणात्मक सम्बन्ध के बारे में निष्कर्ष

77. क्षति संबंधी मापदण्डों की पूर्ववर्ती जांच तथा पाटित आयातों के मात्रा तथा कीमत संबंधी प्रभावों से यह इंगित होता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग की बिक्री में मूल वर्ष की तुलना में लगभग 10% तक की वृद्धि हुई है तथापि उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में पर्याप्त गिरावट आई है। वस्तुतः मूल वर्ष में उत्पादन मात्रा में सुधार की तुलना में उत्पाद के व्यापक स्टॉक के परिसमापन द्वारा मूल जांच में शुल्क लगाए जाने के बाद बिक्री में वृद्धि हुई है। जांच में यह संकेत है कि घरेलू उद्योग को उत्पादन, क्षमता उपयोग, उत्पादकता, लाभप्रदता तथा निवेशों पर आय में अत्यधिक गिरावट के रूप में क्षति हुई है। घरेलू कीमतें यूरोपीय संघ को छोड़कर सम्बद्ध देशों से पाटित आयातों के मात्रा तथा कीमत संबंधी प्रभावों से प्रभावित हुई हैं तथा इन देशों से पाटित कीमतों के घरेलू कीमतों पर पर्याप्त कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री तथा कीमत ह्रास प्रभाव पड़े हैं।

### ज.4 पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा इनकी आवृत्ति होने की संभावना

78. प्राधिकारी के समक्ष घरेलू उद्योग को क्षति के जारी रहने अथवा इसकी आवृत्ति होने की संभावना की जांच करने के लिए निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं। घरेलू उद्योग ने दलील दी है कि निर्णायक समीक्षा में प्राधिकारी को पाटन की भरपाई करने के लिए शुल्क को जारी रखने या परिवर्तन करने अथवा हटाने का निर्णय लेने के लिए पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा इसकी आवृत्ति होने की संभावना की जांच करना अपेक्षित है। घरेलू उद्योग ने अपने अनुरोध में विभिन्न देशों में कानूनों, प्रथाओं तथा समीक्षाओं के मानकों को यह तथ्य उजागर करने के लिए उद्धृत किया है कि "पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा इसकी पुनरावृत्ति" की संभावना का निर्धारण कालातीत समीक्षा जांच के लिए आवश्यक है।

### 79. घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ-साथ यह अनुरोध किया है:-

1. कि संबद्ध देशों के उत्पादक भारतीय बाजार में माल का पाटन कर रहे हैं।
2. कि संबद्ध देशों से पाटित आयात के कारण घरेलू उद्योग को लगातार क्षति हो रही है तथा यदि पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तो घरेलू उद्योग को हो रही क्षति की पुनरावृत्ति होगी अथवा इसमें वृद्धि होगी।

3. कि संबद्ध देशों से आयातों की निर्यात कीमत और पहुँच मूल्य में पाटनरोधी शुल्क लगाने के पश्चात गिरावट आई है;

4. कोरिया गणराज्य से निर्यातों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगाने के बावजूद एक निर्यातक को छोड़कर उस देश से आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है।

5. कि उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है। तथापि, निर्यातकों ने भारत में अपनी निर्यात कीमत में कमी कर दी है;

6. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आयी है। जिस कीमत पर घरेलू उद्योग माल की बिक्री कर रहा है, वह लाभकारी कीमत नहीं है।

7. कि उत्पादकों के पास अत्यधिक अधिशेष क्षमताएं हैं और उनकी घरेलू मांग उनके द्वारा सृजित की गई क्षमताओं से काफी कम है।

80. जहाँ तक कोरिया का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उस देश में संबद्ध वस्तु के दो मुख्य उत्पादक हैं जिनमें से एक को मूल जांच अवधि के दौरान पाटन करता हुआ नहीं पाया गया था और इसलिए कोई शुल्क नहीं लगाया गया था। इसी निर्यातक ने मौजूदा जांच में भी पूरा सहयोग किया है और मौजूदा जांच अवधि में पाटन मार्जिन को सकारात्मक और न्यूनतम स्तर से अधिक पाया गया है। प्राधिकारी के पास उपलब्ध सूचना के अनुसार ऐसा मालूम होता है कि दूसरे निर्यातक ने अपना माल चीनी ताईपेई के रास्ते से भेजा है। कोरियाई उत्पादकों के पास भी अत्यधिक अप्रयुक्त क्षमताएं हैं और उनकी सीमित घरेलू माँग है। भारत को कोरिया से होने वाले निर्यातों से भारत में घरेलू बिक्री कीमत में अत्यधिक कमी हुई पायी गयी है। इस बात का कोई संकेत अथवा वैध तर्क नहीं है कि शुल्क वापस लेने से संबद्ध देश से आयातों के कीमत ढाँचे में परिवर्तन हो जाएगा। इसलिए पाटन मार्जिन की सीमा और मौजूदा आयातों की मात्रा पर विचार करते हुए यह मालूम होता है कि यदि शुल्क वापस लिया जाता है तो कोरिया गणराज्य से पाटन जारी रहेगा और घरेलू उद्योग को ऐसे पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति होती रहेगी।

81. जहाँ तक यूरोपीय संघ का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि ईयू से आयातों की मात्रा क्षति अवधि के दौरान कम रही है और उक्त अवधि के दौरान आयातों का औसत पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमत और प्राधिकारी द्वारा मूल जांच में निर्धारित संदर्भ कीमत से काफी अधिक है। इसलिए ईयू से हुए निर्यातों से घरेलू उद्योग पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा था और उस देश से हुए निर्यातों की मात्रा और कीमतों पर विचार करते हुए यह मालूम होता है कि ईयू से पाटन की पुनरावृत्ति होने और ऐसे आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति होने की कोई संभावना नहीं है।

82. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि अमरीका से संबद्ध वस्तु का कोई सीधा निर्यात नहीं हुआ था, तथापि, अमरीका में विनिर्मित वस्तुओं की एक बड़ी मात्रा का चीनी ताईपेई के जरिए पाटित

कीमतों पर निर्यात किया गया है। भारत को तीसरे देश के जरिए अमरीका से निर्यात की गई वस्तुओं के पहुँच मूल्य से घरेलू कीमतों पर अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव पड़ा है। अमरीका की उत्पादन क्षमता और उत्पाद के व्यापार की मात्रा संबंधी आंकड़ों से यह संकेत मिलता है कि उस देश में अत्यधिक क्षमता उपलब्ध है जिससे यदि शुल्क हटाया जाता है तो निर्यातक भारत में वस्तुओं का पाटन करने में सक्षम होंगे। इसलिए प्राधिकारी का विचार है कि यदि शुल्क हटाया जाता है तो अमरीका से पाटन की पुनरावृत्ति होगी और घरेलू उद्योग को ऐसे आयातों के कारण वास्तविक क्षति होगी।

#### ज.5 क्षति रहित कीमत और क्षति मार्जिन का निर्धारण

83. संबद्ध वस्तु की क्षति रहित कीमत का लागत प्रभाग द्वारा घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का विस्तृत विश्लेषण और संवीक्षा करने के बाद परिकलन किया गया है। प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण \*\*\*\*\*रु./- मी. टन के रूप में किया गया है।

84. क्षति मार्जिन के निर्धारणार्थ प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षतिरहित कीमत की निर्यातों के पहुँच मूल्य के साथ तुलना की गई है। संबद्ध देशों से निर्यातों के भारित औसत पहुँच कीमत और क्षति मार्जिन को अमरीका और कोरिया गणराज्य के विरुद्ध अत्यधिक और यूरोपीय संघ के मामले में नकारात्मक पाया गया है।

#### झ. निष्कर्ष

85. हितबद्ध पक्षकारों के निवेदनों और प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध अन्य तथ्यों पर विचार करते हुए प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि

(i) कोरिया गणराज्य और अमरीका से संबद्ध वस्तुओं का पाटन जारी है और इन देशों से आयात की गई संबद्ध वस्तुओं के पाटन मार्जिन अत्यधिक और न्यूनतम स्तर से अधिक हैं;

(ii) यदि शुल्क हटा लिए जाते हैं तो यूरोपीय संघ से पाटन के जारी रहने और/अथवा पुनः होने की कोई संभावना नहीं है। तथापि, यदि शुल्क हटा लिए जाते हैं तो कोरिया गणराज्य और अमरीका से पाटन जारी रहने की संभावना है;

(iii) कोरिया गणराज्य और अमरीका से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होना जारी है;

(iv) यदि कोरिया गणराज्य और अमरीका से होने वाले आयातों पर से शुल्क हटा लिए जाते हैं तो घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने अथवा पुनः होने की संभावना है। तथापि, यदि यूरोपीय संघ से

होने वाले आयातों पर से शुल्क हटा लिए जाते हैं तो घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है ।

## ५. भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

86. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आमतौर पर पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं से घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः बहाल किया जा सके जो देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देश से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर असर नहीं पड़ेगा ।

## ट. सिफारिशें

87. इस निष्कर्ष पर पहुँचने के पश्चात कि यूरोपीय संघ से आयातों के कारण पाटन और क्षति के जारी रहने की कोई संभावना नहीं है, प्राधिकारी इन देशों/क्षेत्रों के विरुद्ध शुल्क जारी रखने का कोई औचित्य नहीं पाते हैं और इसलिए यूरोपीय संघ के विरुद्ध लागू शुल्क को वापस लेने की सिफारिश करते हैं ।

88. तथापि कोरिया गणराज्य और अमरीका से आयातों के कारण पाटन और क्षति की संभावना के सकारात्मक निर्धारण के मद्देनजर प्राधिकारी का यह मत है कि इन देशों से आयातों के विरुद्ध इस उपाय को जारी रखना अपेक्षित है । उस देश से पाटन के मौजूदा स्तर और घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर विचार करते हुए प्राधिकारी का यह मत है कि लागू उपाय में संशोधन किए जाने की जरूरत है । इसलिए प्राधिकारी इसे आवश्यक समझते हैं और कोरिया गणराज्य और अमरीका से संबद्ध वस्तुओं के आयात पर नीचे विनिर्दिष्ट ढंग और विधि से पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ।

89. प्राधिकारी द्वारा अनुसरण किए गए कम शुल्क संबंधी नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन अथवा क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके । इस बात पर विचार करते हुए कि कच्ची सामग्रियों और तैयार उत्पादों की कीमत में अत्यधिक परिवर्तन हो गया है, प्राधिकारी नियत शुल्क आधार पर शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं और कोरिया गणराज्य और अमरीका के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की सिफारिश करते हैं जैसाकि निम्नलिखित तालिका के कॉलम 9 में दर्शाया गया है ।



**शुल्क तालिका**

| क्र. सं. | उपशीर्ष अथवा टैरिफ मद | माल का विवरण   | विनिर्देशन | उद्गम का देश       | निर्यात का देश     | उत्पादक                                | निर्यातक                    | शुल्क की राशि | माप की इकाई | मुद्रा  |
|----------|-----------------------|----------------|------------|--------------------|--------------------|--|-----------------------------|---------------|-------------|---------|
| (1)      | (2)                   | (3)            | (4)        | (5)                | (6)                | (7)                                    | (8)                         | (9)           |             |         |
| 1        | 283711                | सोडियम साइनाइड | कोई        | कोरिया गणराज्य     | कोई                | मै. टोंग शुह पेट्रोकेमिकल्स कॉर्पोरेशन | मै. हनवाह कॉर्पोरेशन        | 29.62         | मी. टन      | अम. डा. |
| 2        | 283711                | सोडियम साइनाइड | कोई        | कोरिया गणराज्य     | अमरीका के अतिरिक्त | उपर्युक्त के अलावा कोई अन्य            | उपर्युक्त के अलावा कोई अन्य | 250.86        | मी. टन      | अम. डा. |
| 3        | 283711                | सोडियम साइनाइड | कोई        | अमरीका के अतिरिक्त | कोरिया गणराज्य     | कोई                                    | कोई                         | 250.88        | मी. टन      | अम. डा. |
| 4        | 283711                | सोडियम साइनाइड | कोई        | अमरीका             | कोई                | कोई                                    | कोई                         | 268.27        | मी. टन      | अम. डा. |
| 5        | 283711                | सोडियम साइनाइड | कोई        | कोई                | अमरीका             | कोई                                    | कोई                         | 268.27        | मी. टन      | अम. डा. |

**ठ. आगे की प्रक्रियाएं**

90. केन्द्र सरकार के आदेशों जो इस सिफारिश से उत्पन्न हो सकते हैं, के विरुद्ध कोई अपील इस अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

91. प्राधिकारी इस अधिनियम के संगत प्रावधानों और इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार इसमें यथा अनुशंसित निश्चयात्मक उपाय को जारी रखने, उसमें संशोधन करने अथवा समाप्त करने संबंधी जरूरत की समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। प्राधिकारी द्वारा ऐसी किसी समीक्षा हेतु कोई भी अनुरोध स्वीकार नहीं किया जाएगा यदि यह किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय सीमा के अनुसार दाखिल नहीं किया जाता है।

क्रिस्टी एल. फेर्नांडेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**  
(Department of Commerce)  
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

**NOTIFICATION**

New Delhi, the 27th September, 2005

**Sunset Review—Final Findings.**

**Subject:** Sunset Review of the definitive anti-dumping duty imposed on import of Sodium Cyanide originating in or exported from the US, the EU, the Czech Republic and Korea RP.

**A. BACKGROUND & INITIATION**

**No. 15/9/2003-DGAD - WHEREAS,** The Designated Authority (herein after also referred to as the Authority), having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (herein after referred to as the Act) and the Customs Tariff

(Identification, Assessment and Collection of Antidumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (herein after referred to as the Rules) investigated and recommended imposition of provisional Anti Dumping duty on imports of Sodium Cyanide (hereinafter referred to as subject goods) falling under Sub-heading 283711 of ITC HS classification and originating in or exported from US, EU, the Czech Republic and Korea RP. The interim findings of the Authority were published vide Notification dated 15<sup>th</sup> October 1999 and provisional antidumping duty was imposed on the subject goods vide Customs notification No. 134/99-Customs dated 27<sup>th</sup> December 1999. The Authority came out with its final findings on 7<sup>th</sup> March 2000 and definitive anti dumping duty was imposed by the Central Government vide Notification No. 83/2000 dated 6<sup>th</sup> June 2000, as amended by Notification No. 10/2001-Customs dated 31<sup>st</sup> January 2001

2. **AND WHEREAS**, The Designated Authority, under Section 9A (5) of the Act and Rules made there under, received an application from M/s Cyanides and Chemicals Company (CCC) on behalf of the domestic industry, for initiation of a sunset review investigation for continuation of the antidumping duty imposed on the subject goods under the above mentioned notifications for a further period of 5 years. The Authority, on the basis of a request made on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 29<sup>th</sup> March 2004, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping sunset review investigation in respect of the duty in force against the above countries as above, to determine whether the expiry of the duty would be likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

3. **AND WHEREAS** antidumping duty as notified vide Notification No. 83/2000 dated 6<sup>th</sup> June 2000, as amended by Notification No. 10/2001-Customs dated 31<sup>st</sup> January 2001 was extended up to 26<sup>th</sup> December 2005 vide notification No. 56/2005 dated 23<sup>rd</sup> June 2005 in terms of Section 9 (A) (5) of the Act.

## **B. PROCEDURE**

4. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:

i) The Authority sent questionnaires, alongwith the initiation notification, to all known exporters/producers of the subject goods in the subject countries, in accordance with the Rule 6(4), to elicit relevant information. For the purpose of this investigation the countries under investigation were the US, the EU, Czech republic and Republic of Korea. However, due to expansion of the European Union and inclusion of Czech Republic in the extended EU, this investigation covers the extended EU, USA and Republic of Korea (herein after termed as subject countries/territories);

ii) The Embassies/High Commissions/ Representatives of the subject countries including the Delegation of the European Union in New Delhi were informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers from their respective countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. Copies of the letters, petitions and questionnaires sent to the exporters were also sent to the Embassies/High Commissions of subject countries alongwith a list of known exporters/ producers;

iii) Investigation was carried out for the period starting from 1<sup>st</sup> April 2003 to 31<sup>st</sup> December 2003 (POI). However, injury examination was conducted for a period from 1999-00 to 2002-03 and the POI.

iv) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and DGCI&S to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations;

v) In response to the initiation communications were received from the following exporters through their legal representatives:

- a) M/s Tong Suh Petrochemicals Corporation, Korea RP (producer of the subject goods) exporting through M/s Hanwah Corporation, Korea RP.
- b) M/s DSM Acrylonitrile in its letter informed the Authority that they produce and sale NaCN in liquid form and their activities are restricted to Western Europe only.
- c) BASF AG informed that their products are exclusively used for captive use only and they did not sell NaCN out side Germany.

No other exporter from any of the countries named, have submitted any response, in any manner, to the initiation notification.

vi) Questionnaires were sent to known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4). Following importers/ users of the subject goods filed their submissions in response to the initiation notification:

- a) M/s Techno-Commercial Traders, New Delhi
- b) M/s Daurala Organics, New Delhi

vii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;

viii) The Authority verified the information furnished by the domestic industry as well as the supporting party to the extent possible to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicants so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;

ix) The Authority held a public hearing on 09.08.2004 to hear the interested parties orally which was attended by representatives of the domestic industry, exporters, importers/ users of the subject goods and representative of the Delegation of European Union. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions received from interested parties have been considered by Designated Authority in this finding;

x) The Authority issued disclosure statements to all interested parties to this investigation intimating the essential facts under consideration by the Authority and methodology of determination proposed to be adopted by the Authority, and calling for the comments of the interested parties to the said disclosure. Comments of the interested parties, to the extent they are relevant have been considered by the Authority in this finding.

xi) The Authority has examined the confidentiality claims of various interested parties in respect of the data submitted by them. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis by the interested parties' alongwith non-confidential summary thereof, has been treated confidential. \*\*\*\*\* in this Notification represents information furnished by the petitioner on confidential basis and so considered by Authority under the Rules;

### **C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND 'LIKE ARTICLE'**

5. The product under consideration in the original investigation and the product attracting antidumping duty on the basis of the final findings of the Authority is Sodium Cyanide (NaCN), originating in or exported from the subject countries, classified under Customs subheading 283711 of Customs Tariff Act. This classification is only indicative and in no way binding on the scope of present investigation. Sodium Cyanide is a pure basic inorganic chemical. It is manufactured by reacting Hydro Cyanic Acid (HCN) with Caustic Soda. It is mainly used by industries such as dye intermediates, Electro-plating chemicals and for manufacture of heat treatment salts, gold extraction etc. This being a sunset review investigation, the scope of the investigation is limited to the product already identified in the original investigation.

### **D INITIATION AND STANDING OF THE DOMESTIC INDUSTRY**

6. The sunset review has been initiated on the basis of a duly substantiated request submitted by M/s Cyanides and Chemicals Corporation (CCC) and supported by M/s Gujarat Alkalis and Chemicals Ltd, on behalf of the domestic industry, in terms of Article 11.3 of the Antidumping Agreement read with Section 9 A (5) of the Acts, and the same has not been challenged by any of the interested parties. Therefore, the applicant M/s Cyanide and Chemicals, with majority production of the subject goods in India constitutes the domestic industry for the purpose of the current investigation.

### **E. OTHER ISSUES RAISED BY THE INTERESTED PARTIES**

7. The submissions made by the parties to this review investigation and their arguments have been summaries as follows:

#### **E.1 Views of the domestic Industry**

8. The domestic industry in its various submissions has inter alia argued

- That M/s CCC and GACL are the two manufacturers of the subject goods in India. While CCC produces NaCN from grass route level, using the inorganic synthesis method from ammonia, Caustic soda and Natural Gas,

GACL procures HCN from IPCL for manufacturing NaCN. It has been argued that HCN is a co-product of IPCL supplied to GACL through pipelines;

- That price of both, natural gas and ammonia have been rising, whereas the prices of NaCN have been falling. Prices of NaCN have been sliding from Rs\*\*\*\*\*/- PMT to RS \*\*\*\*\*/- PMT;
- That GACL is a PSU, known for its efficiency and should get a reasonable return. However, GACL is forced to match the prices offered by exporters from Korea which is at about Rs\*\*\*\*\*/-;
- That the market for NaCN has grown but the growth has been cornered by the exporter from Korea; Inventory built up of the Company is huge and stands at almost 4 month's production now. Therefore, the domestic industry is forced to export since the consumption norm of ammonia goes up if not used optimally.
- That in the original investigation and in all subsequent investigations M/s Hanwa has been given negative dumping margin though their balance sheet shows loss.
- That Caustic Soda and Chlorine are produced by Hanwa Chemicals, which is an associated Company of M/s Hanwa Corporation and the same is supplied to M/s Tongshu, who produces HCN. It is therefore, possible that there is some kind of buy back arrangement between Tong Shu and Hanwa for NaCN.
- That Tong shu has not invoiced the goods to India. It appears that M/s Hanwa has procured the goods from Tong Shu and exported to India. Therefore, it needs to be examined whether a trading company is entitled for a dumping margin.
- That the price of inter-unit transfer of HCN by Tong Shu for manufacture of NaCN should be assessed as a co-product and not as a by-product as claimed by the exporter.
- That the producer-exporter of has not correctly allocated all associated cost of production and SGA expenses to the product under consideration and therefore, the domestic sales of the producer are not in the ordinary course of trade.

## **E.2 Views of the responding Exporter from Korea RP (M/s Hanwha Corporation and TSPC)**

9. M/s Hanwha Corp and M/s Tong Shuh Petrochemicals Corporation, in their combined response as exporter-producer of the subject goods in Korea RP have inter alia submitted that

- The petitioner company produces and sales three grades of sodium cyanide, i.e., NQ, SQ, and Mix quality material, in the local market without specifying the specification and purity level of the product. No manufacturer in the world is selling sodium cyanide in different grades. Normally, there is only one grade having purity level of Min. 98%.
- They never engaged in any kind of dumping activity. Though their capacity has increased, their selling price to India has also been increasing since 1999. The prices of exports to India are comparatively higher to the same for other countries and as well as the domestic sales during POI. The Petitioner have admitted that export price of Korea to India is higher than the average export price of USA to the world.

- The petitioner has presumed that USA producers/exporters are all along involved in dumping activities over a period and it is surprising that how any producer/exporter can survive being involved in the dumping activities for such a long time and for its all exports.
- In the initial investigation in 1999-2000 the Authority has determined the export prices of HWC-TSPC to India as non-dumped price and their prices from initial investigation to current review investigation has gone up. Since there is no material change in the prices of raw materials, etc., the current exports to India are also at non-dumped prices.
- There is no doubt about the increase in the world exports of Korean exporters as both the producers in Korea RP have increased the capacity and production. But, the Petitioner is presenting a misleading picture that prices over the years have declined due to increase in their export quantity. The prices over the year are more or less stabilized; however, in year 2003 onwards there is an increasing trend in the prices of sodium cyanide due to rise in the gold prices.
- Apparently no other country except India has imposed anti dumping duty on imports of Sodium Cyanide. Except India HWC-TSPC have not faced with any anti dumping investigations from any other countries in the world.
- While it is a fact that exports of TSPC has increased over the years, but, it is important to note that for TSPC, India has never been a target country and the same is evident from the export quantities. If TSPC has any intention to resort to predatory pricing to harm the petitioner, it could have easily done so as no anti dumping duty was imposed in the original investigation on imports from TSPC.
- The normal price trend of the subject goods, in the entire world, is in the range of USD 900-1000 per MT. The average sales realization of the domestic industry in any case is far high, if the prime grade of sodium cyanide is taken. Even after that if domestic industry is claiming that they are suffering losses because of higher cost of production, there may be other reasons for higher cost production like uneconomical capacities/technology, inefficient handling, generation of sub-standard product, higher overheads, etc.

### **E.3 Views of other interested parties**

10. The views of the importers and other interested parties have been summarized as follows:

#### **E.3.1 Techno-Commercial Traders**

11. M/s Techno-Commercial Traders has made its submissions as the importer of the subject goods from the subject country and has argued that

- The demand of Sodium Cyanide has grown beyond the capacities of the local producers and imports of the same are not causing any injury to them.

Rather it is helping the user industry to meet their demands and remain competitive

- The sales of the Indian producers are increasing from year to year on regular basis, as well as the net realization is very attractive.
- The sale of M/s Cyanides and Chemicals is inclusive substantial quantities of Second Quality (SQ), which is Rs. \*\*\*\*\*/- per MT lower than normal quality (NQ), and Mixed Quality. The profit margins would have been much higher if no SQ material was sold.
- The production and sales of other domestic producer, i.e., M/s GACL has also increased in the year 2002 onwards and attained level of \*\*\*\*\* M.T. from \*\*\*\*\* MT in 2001-2002. The inventory of GACL is always on minimum level indicating total production sales. This plays a very important role on realization value of petitioner as GACL reduces their price when they are producing more and the petitioner company, i.e. M/s Cyanides and Chemicals (CCC) always follows GACL to retain their position.
- The domestic price of Sodium Cyanide always depends on the production quantity of the supporting company GACL. There has been history of GACL reducing the prices in the domestic market whenever their production increases. The basic reason for GACL to do so is that they always wanted to liquidate their stocks of sodium cyanide as soon as possible. Historically, this approach of GACL always put pressure on the CCC pricing policy and whenever the production of GACL was lower CCC always took opportunity to increase their market prices.
- The imports only fill the gap between the domestic demand and supply and in no way compete with domestic manufacturers. The demand of Sodium Cyanide is increasing due to export of Pharmaceuticals Agro-Chemicals & API's.
- The Petitioner also exports Sodium Cyanide though at much lower prices to contain domestic prices, otherwise their profitability would have been still higher.
- Therefore, injury (if any) so claimed by the petitioner is self-inflicted and imports are not having role whatsoever.
- In India HCN is sold by IPCL only, who is getting HCN as bye-product while producing Acrylonitrile and further Acrylic Fiber. They are supplying the same to GACL & GSFC through pipeline over the fence. It is a known fact that HCN can't be exported or sold otherwise, the same has been accepted and admitted in the Petitioner in their submissions also.
- The stock values (cost) of HCN as per closing stock shown in the petitioner's balance sheet for the corresponding periods are very well comparable to selling price of IPCL.

### E.3.2 M/s Daurala Organics Limited

12. M/s Daurala Organics Limited has filed its submissions and comments as an importer and user of the subject goods and has inter alia argued that

- The petitioner company has granted large Interest Free Loans to its Group companies and the same was outstanding as on 31.03.2003: as per its balance sheet. Since the loans/advances have not been repaid by the borrowers it is probably one of the major reasons for lower Profit Before Tax (PBT) of the producer company. In spite of the above, PBT for the last three financial years have been steadily improving.
- The petitioner company has been offering Sodium Cyanide of different grades at different prices to the local market. The prices have been varying from Rs. \*\*\*\*\*/kg to Rs. \*\*\*\*\*/kg and in fact, they have been selling material as Off Grade. It therefore appears that they may be selling sodium cyanide of different grades, which has not been elaborated in their petition.
- There has been increase in price of Sodium Cyanide by over 20% since imposition of Anti Dumping Duty on account of exchange rate and basic price of the product.

### E.3.3 Other exporters and interested parties

13. M/s CyPlus GmbH, Germany, in its brief submission has maintained that the prices charged by them are fair given their high quality of Sodium Cyanide sold to India and there is no compensatory arrangement with its Sodium Cyanide customers in India. BASF Germany also maintained that they produce NaCN only for their captive consumption. Therefore, they have not participated in this investigation and would approach the Authority for a new Shipper review if needed in future.

14. The Indian Drug Manufacturers Association has submitted that there has been periodic shortage of the product with unilateral price increase by the only two manufacturers of the product in India. The production of these two units is far less compared to the demand and price increase by the producers is not justified. Since bulk drugs are price controlled there is no possibility of drug manufacturers passing on the burden of cost increase to their customers, i.e. formulators.

## F. EXAMINATION BY THE AUTHORITY

15. The Authority has taken note of the above arguments of the interested parties and the issues have been addressed in appropriate places in this finding.

16. Section 9 A (5) of the Act provides that the Authority, in a sunset review, is required to examine, whether the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. Therefore, the issues before the Authority are to determine:

- whether Dumping is likely to continue or recur, if definitive duties are removed or expired;



- Whether Injury to the Domestic Industry is likely to continue or recur, if definitive duties are allowed to expire or removed.

17. On the basis of the above these issues have been examined in the succeeding paragraphs.

## **G. CONTINUATION OR RECURRENCE OF DUMPING:**

### **G.1 Applicant's Views**

18. Quoting the US practice in their Sunset Review investigations, the applicants have argued that the following circumstances would lead to affirmative determination in a sunset review:

- Dumping continued at any level above 0.5% after the issuance of definitive duty order; Or
- Imports ceased after issuance of the order; Or
- Dumping was eliminated after the issuance of the order and import volumes declined significantly.

19. The applicants have also argued that existence of actual imports in the POI is not a pre-requisite in a sunset review investigation, which is more of a likelihood test rather than an actual dumping and injury test. In this connection they have quoted the decision of the EC in the matter of Polyester Staple Fibre from Belarus in which the said authority has continued the duty even when there was no imports from that country, holding that revocation of the duty would lead to recurrence of dumping. The applicants have also quoted Brazil; Import of Jute bags from India, sunset review case, where the duties have been continued even though there were no imports from India in the entire five-year period.

20. The applicants further argue that the WTO Appellate Body, in the matter of US sunset review of antidumping duties on Corrosion Resistant Carbon Steel Products from Japan, held that there is no obligation under the antidumping agreement for investigating Authorities to calculate or rely on dumping margins in determining the likelihood of continuation or recurrence of dumping.

21. In summary the arguments of the applicants are that inescapable conclusion in any of the following conditions would be likelihood of continued dumping or likelihood of recurrence of dumping:

- In case the product has been exported to India from the subject countries at prices below normal value in the relevant period;
- In case exports of the product have ceased after imposition of Antidumping Duty but the exporting country producers continue to export the products at dumped prices in other countries.

### **G.2 Views of exporters, importers and other interested parties**

22. No substantive arguments have been made by the interested parties including the cooperating exporters from Korea RP on the above legal arguments

raised by the domestic industry regarding the standards and scope of sunset review investigation based on international practices.

### **G.3 Examination by the Authority**

23. The Authority has noted the arguments made by the applicants on the methodology and practices of various Authorities in their Sunset Reviews as well as relevant WTO jurisprudence on the subject. The issue of continuation and likelihood of recurrence of dumping has been examined as follows:

### **G.4 Continuance of Dumping: Determination of Normal Values, Export Prices and Dumping Margins**

24. None of the exporters from the subject countries other than M/s Tong Shuh Petrochemicals Corporation (TSPC) and M/s Hanwah Corporation (HWC) has provided any information and cooperated in the investigation in order to enable the Authority to determine the normal value and export price of the subject goods from these countries. Therefore, the Authority has determined the dumping margin for the non-cooperating exporters from the subject countries on the basis of facts available in terms of Rule 6(8) of Antidumping Rules read with Article 6.8 of the Agreement.

#### **G.4.1 Korea RP**

25. The Authority notes that there was significant export of the subject goods from Korea RP during the POI and the injury investigation period. Though Korea has more than one producer of the subject goods, only one producer-exporter combination has filed complete response and cooperated in the investigation. Therefore, current dumping from this country has been examined in the light of cooperation received from the exporter from that country.

##### **G.4.1.1 M/s Tong Shuh Petrochemicals Corporation and M/s Hanwah Corporation, Korea RP**

26. The producer-exporter combination of M/s Tong Suh Petrochemicals Corporation and M/s Hanwah Corporation, Korea RP have filed their combined response with full details of their domestic sales, exports to India and cost of production and have fully cooperated in the investigation. The Authority also notes that in the original investigation the above exporter-producer combination fully cooperated in the investigation and dumping margin in respect of them was found to be negative during the POI of the said investigation. Accordingly, no duty was imposed against this exporter in the original investigation.

27. On the basis of their current response, the data submitted by this exporter-producer combination was verified and the determination of normal value, export price and current dumping margin, in respect of this cooperating exporter is based on the response filed and verified by the Authority.

#### **a) Normal value**

28. The Authority notes that During the POI Hanwha and TSPC have exported to India only one grade of Sodium Cyanide i.e. Sodium Cyanide (98% minimum). The

product sold in the home market by TSPC is identical to the product exported to India. Therefore, the entire home market sale of the exporter has been taken as 'like article' for the purpose of determination of normal value. However, the Authority notes that while the domestic sales of the subject goods are directly handled by the producer i.e. TSPC, the exports to India is entirely through M/s Hanwah Corporation. For the purpose of determination of normal value the Authority has examined the home market sale of the producer and subjected them to ordinary course of trade.

29. The cost of production of TSPC was examined from their records. It was noticed that TSPC produces NaCN using HCN and NaOH as major raw materials. While NaOH is sourced from the domestic market, TSPC uses its own HCN produced from its Acrylonitrile Plant at Ulsan. The producer maintained that HCN is a by-product generated during the process of manufacture of their main product ACN. It has been claimed by the exporter / producer that HCN is extremely hazardous chemical and is not traded in the global market. The exporter has further submitted that since the product does not have any realizable value, no reasonable cost can be attributed to it. However for the purpose of assessing the cost of production of Sodium Cyanide, an opportunity cost equal to the cost of incineration has been attributed to the raw material. The company also argued that marginal cost involved in storing and using HCN generated has been reflected in the unit cost of HCN shown in their response. Since historically they have treated this product as a by-product of their main production line, no separate cost data has been maintained by them for this product.

30. On the other hand the domestic industry has argued that HCN cannot and should not be treated as a by-product and it should be treated as a co-product to assign proper cost to its production. In this regard they have produced several definitions of co-product and by-product as per accounting standards. They have also raised several arguments regarding the cost of NaOH and compensatory arrangements between TSPC, as the purchaser of NaOH to produce NaCN and Hanwah Corporation as the producer of NaOH and purchaser of NaCN from TSPC. In addition to the above the domestic industry has raised the issue of allocation of several elements costs associated with production of NaCN, like interest costs. The issues raised by the domestic industry have been examined by the Authority to determine the actual cost of production of the product under consideration.

31. The producer TSPC has argued that HCN is a by-product produced in the production process of ACN and the cost of HCN has been allocated accordingly. They have also argued that HCN is not traded anywhere in the world, except across-the-fence supply for local use. Therefore, actual international price of the product cannot be ascertained. The exporter also produced the price of HCN supplied by the Indian producer of this product i.e. M/s IPCL, to its consumers for a comparison of the prices, in case Authority wanted to decide that this product should be treated as a co-product.

32. In view of the contesting views of the producer-exporter and the domestic industry, the Authority requested the other Indian producer of NaCN, i.e. M/s Gujarat Alakies and Chemicals Ltd. (GACL) and only Indian producer of ACN and

HCN, i.e. M/s Indian Petrochemicals Corporation (IPCL) to provide their cost data of their respective products. The premises of both the companies were also visited to understand their production process and cost allocation methods for HCN. However, neither GACL nor IPCL could provide any credible information to justify cost allocation for HCN produced during the process of manufacture of ACN as a co-product. The transaction price between IPCL, as the producer of HCN and GACL, as the consumer of HCN across the fence was also verified as a benchmark price. However, the domestic industry has also contested the transaction price between IPCL and GACL on the grounds that the transaction price between IPCL and GACL does not reflect true price of HCN. The domestic industry was asked to produce evidence of actual international transaction prices of this product in support of its claim, if the cost allocated by the producer-exporter or the transaction price between Indian producer and its consumers are to be disregarded as claimed by them.

33. The domestic industry, produced a copy of a report prepared by the U.S. Environmental Protection Agency in August 2000 and on the basis of the said report, the domestic industry claimed that HCN price in the US was US\$0.41 to US\$0.60 Per lb. Therefore, the average price of HCN should be taken as US\$0.50 per lb for the purpose of determination of cost of production of NaCN.

34. The Authority has carefully examined the said report. The report prepared in the year 2000 was meant for an economic impact analysis of the affected industries for listing of hazardous inorganic chemical industries. However, examination of the report submitted by the domestic industry does not give much credence to the claims of the domestic industry that the HCN cost of the producer in Korea should be based on the co-product pricing structure. The second claim of the domestic industry that the transaction price of HCN should be around US\$0.50 per Lb, also does not appear to be valid, as the average price quoted in the report is for the year 2000 and the prices are based on cost structure of a different process, admittedly less cost effective.

35. As far as the responding exporter/producer from Korea RP is concerned, the producer is clearly getting its HCN for NaCN production from its ACN plant as a by-product and has its own costing structure for the by-product. The Authority notes that the responding producer in Korea, M/s TSPC, has allocated the incineration cost and associated cost of storage and transmission to HCN, treating it as a by-product of ACN plant and accordingly this cost has been allocated as the raw material cost for NaCN. Even if the transaction price between the Indian producer of HCN and its customers is accepted as the price to be allocated for HCN in NaCN production of the Korean producer no major impact on the total cost could be found. Therefore, the Authority did not find any strength in the arguments of the domestic industry for adoption of any other cost structure for HCN in the manufacture of the subject goods by the cooperating producer in Korea RP.

36. The other issues raised by the domestic industry regarding the cost of production were also examined during the investigation. However, the cost of production of the subject goods, of the producer was found to be much below its selling price in their domestic market.

37. In its post disclosure submissions the domestic industry has reiterated its stand that HCN should be treated as a joint product of the ACN production and not as a by-product. They have argued that by the definition provided by the Cost Accounting Standard Board, HCN should be treated as a joint product. They have also argued that the marketability of such products is of no relevance. Therefore, relative importance of the products is important for the present purposes and in any event, HCN cannot be termed of "minor importance", which is the definition of by-product. The domestic industry has further argued that there is a substantial cost involved from the stage of separation and consumption of HCN and same should be accounted for. In this connection, the DI has referred to its own cost paid to GACL towards storage and handling, as well as maintenance of incineration facility as a mandatory requirement. The domestic industry has also argued that US Environmental Protection Agency report submitted by them more than establishes that the price of HCN tends to be comparable to the cost of production of HCN from synthetic route and the cost difference between the two technologies is entirely irrelevant. The domestic industry has also argued that the annual report of Tong Shuh shows losses while ACN price was high in the international market, whereas for the sodium cyanide business they have shown huge profit. Therefore, DI has argued that the exporter has not adequately disclosed cost associated with production and sale of sodium cyanide and ACN.

38. The Authority has examined the definitions of by-product and joint product as brought to its notice, the nature of the product, various documents submitted by the contesting parties, including environment protection agency report and the accounting practices of the exporter. The Authority also notes that in the original investigation the product was treated as a by-product and the domestic industry did not appeal against that decision. Considering the factual matrix of the case the Authority is of the view that there is no reason to change the basis of the determination in the instant case.

39. As far as allocation of cost of HCN from point of separation to consumption and various other expenses towards manufacture of Sodium Cyanide is concerned the Authority has examined the arguments of the domestic industry and is of the view that the costs allocation made by the cooperating exporter is as per the accounting standards of the exporting country. It is also noted that allocation suggested by the domestic industry would not have any significant impact on the determination of normal value for the exporter. Therefore, the normal value for the cooperating exporter has been determined as follows:

40. As far as domestic selling price of the responding exporter is concerned, the exporter has reported \*\*\*\*\* transactions of \*\*\*\*\* MTs of the subject goods in the Korean market. However, most of these transactions are to major trading houses in Korea at ex-works prices. Weighted average ex-works price of the producer in the domestic market; as per the producer's records was US\$\*\*\*\*\* per MT. No other adjustments have been claimed and admissible on the ex-works prices of the producer. Therefore, the normal value of the product in Korea RP works out to US\$\*\*\*\*\*per MT

**b) Export Price**

41. The exporter-producer combination has reported \*\*\*\*\* transactions (\*\*\*\*\*MT) of the product under consideration during the POI. It is noted that the entire export transactions to India has been manufactured by TSPC, and routed through Hanwha Corporation. These transactions were verified from their records. It was noticed that TSPC sells the products to HWC on FOB port of loading terms, and HWC in turn sells the materials to the Indian customers. Though the transfer of goods from TSPC to Hanwha is treated as sales, since the product is ultimately destined for exports no taxes (VAT) is payable on such transaction. HWC negotiates the price with Indian customers. As the term of sales between HWC and Indian customers are "CIF", all other direct selling expenses like ocean freight, handling etc. are borne by HWC. Credit period offered to Indian customer is the sole discretion of HWC and any opportunity cost arising out of this is borne by HWC, out of its margin.

42. Weighted average CIF price to India is US\$\*\*\*\*\*per MT. To arrive at ex-factory price of exports to India, prices of HWC to Indian customers has been adopted as the basic price. All the direct expenses made by HWC after FOB like ocean freight, handling charges, agent commission, credit others including insurance, HWC margin and inland freight borne by TSPC, (since TSPC offers the product to HWC on FOB terms), have been deducted to arrive at ex-factory price. As per the exporter's own data the export price at ex-works level works out to US\$\*\*\*\*\*per MT.

**c) Adjustments**

43. Article 2.4 of the Agreement provides that

*"A fair comparison shall be made between the export price and the normal value. This comparison shall be made at the same level of trade, normally at the ex-factory level and in respect of sales made at as nearly as possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merit, for differences which affect price comparability, including difference in conditions and terms of sales, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other difference which are also demonstrated to affect price comparability".*

44. It may be noted that while the export transaction prices reported by HWC are at retail level to actual consumers in India, the domestic sales of TSPC are at the wholesale level to major trading companies. Therefore, the transactions are not at the same level of trade requiring level of trade adjustments to bring the same to net-ex-factory level for the purpose of fair comparison with the export price in terms of Article 2.4 of the Agreement.

45. It is also noticed that while the direct expenses borne by Hanwha after transfer of goods from TSPC at FOB level (at the port of export) till CIF Indian port has been accounted for, the indirect selling, general and administrative expenses incurred HWC and its profit margin towards export of this product has not been accounted for. The company maintained that these expenses are very insignificant

as the volume is low and they do not have separate business set up to handle this product, for which SGA expenses can be accounted for. It was argued that these minor expenses are borne out of their margin, which is indicated against each export transaction. However, margin of Hanwha, after accounting for all direct expenses, is as low as below \*\*\*\*\*%. The exporter has argued that this product constitutes a very marginal volume of its total business and therefore, they operate at a very marginal profit on this product.

46. However, examination of the balance sheet of HWC indicates that indirect selling expenses incurred by the Company on its business activity accounted for \*\*\*\*\*% of its total turn over, whereas, net margin of the Company in its export transaction to India, after accounting for the direct expenses, is less than \*\*\*\*\*% of the sales value. Therefore, it is appropriate to adjust the indirect selling expenses at the same ratio of \*\*\*\*\*% of the sales value and also make allowance for a reasonable profit margin.

47. After adjusting for the indirect selling and general expenses the net margin of the trading company on the export transactions to India becomes negative. Therefore, it is appropriate to adjust an amount of reasonable profit margin to arrive at the net ex-works export price for comparison with its normal value in the country of export. As far as reasonable profit margin is concerned the balance sheet of HWC for the corresponding shows that net profit of the company for 2003 was \*\*\*\*\*% of the sales value. Therefore, an amount of \*\*\*\*\*% on the sale price to India has been adjusted towards reasonable profit margin of Hanwha to arrive at the net export price ex-factory level in terms of Article 2.4 of ADA.

48. The domestic industry has argued that exporter, being a subsidiary of Japanese Company, seems to be paying commissions to its parent Company on account of huge investment made by them in this plant. Therefore, an appropriate price adjustment should be made in respect of its export price to India. But no verifiable evidence has been produced by the domestic industry in support of this argument. However, it may be noted that if such an adjustment is necessary, it would be applicable to all transactions of sales by TSPC, including its domestic sales, and net effect of adjustment would be nullified. Therefore, no such adjustment is warranted.

49. In its post disclosure submission the domestic industry has argued that expenses of both the companies i.e Hanwha Corporation (HWC) and Hanwa Chemical Corporation (HCC) have to be considered based on their annual account, for adjustment towards handling the products. The domestic industry has argued that Hanwha Chemical Corporation (HCC), with its office in the New Delhi, is the selling agent of HWC for sodium cyanide in India. It has been argued that HCC being a separate company, its expenses should be accounted for. The Authority notes that the Annual Report of Hanwha Corp indicates that Hanwha Chemical Corporation is an affiliated Company of Hanwha Corp with 25% equity participation. However, export documents in respect of sales to India do not show any direct involvement of HCC in the transaction between TSPC-HWC and the buyers in the India. The buyers in India raise the order with Hanwa Corporation directly and export invoices were also raised by Hanwa Corporation against the buyer. Neither

HCC, Korea, nor its liaison office of HCC in Delhi seem to have any significant role as an intermediary between HVC and buyer, requiring an adjustment as argued by the domestic industry. Therefore, the Authority is of the view that no separate adjustment towards this can be imposed in terms of Article 2.4 of the Agreement.

50. M/s TSPC-HWC in their post disclosure submission has argued that the adjustments towards SGA and profit margins adopted by the Authority is arbitrary and without application of mind. They have argued that Hanwah Corporation is a major manufacturing Company and trading activity is a small proportion of its activities. Therefore, the margin and SGA expenses in respect of manufacturing activities cannot be adopted for the trading activity and the Authority has failed to understand the basic margins earned by any company in trading activities. They have argued that trading activities do not involve any warehousing, local transportation, advertisement, taxes, supplies, market development expenses etc. and all direct expenses incurred have been duly accounted for in their submissions. Regarding profit adjustments, the exporter has argued that the Authority has erred in taking into account non-operating incomes and expenses for computation of profit margin for the trading company. Since the trading company does not employ any capital in the trading activity the cost involved by Hanwah is almost nil and whatever direct expenses are incurred in such transactions have already been accounted for.

51. The issues have been examined by the Authority and it is noted that while the direct expenses have been accounted for in the exporter's submission, there is no separate reporting towards its trading activities and expenses incurred and profits earned against the same in the Annual Reports of the Company. Therefore, only option available was to adopt the indirect SGA and profit margin on the basis of turnover for the company as a whole. In view of the above the arguments of the exporter cannot be sustained.

52. Accordingly, the adjusted net ex-works export price for this exporter-producer combination works out to US\$\*\*\*\*\*per MT.

#### d) Dumping Margin

53. The weighted average normal value at the ex-works level has been compared with the adjusted weighted average net export prices at the ex-works level and the dumping margin works out as follows:

| US\$ per MT | Selling price to India | Adjustments | Net Ex-works Export Price | Net Ex-works Normal Value | DM    | %     |
|-------------|------------------------|-------------|---------------------------|---------------------------|-------|-------|
|             | *****                  | *****       | *****                     | *****                     | ***** | 3.71% |

#### G.4.1.2 Other Exporter from Korea RP

54. The Authority notes that there are other major producers of the subject goods in the Republic of Korea with significant capacity and production volume who have not participated in this investigation. For the non-cooperating exporters from Korea



RP the Authority has determined the dumping margin during the POI on the basis of best facts available. For this purpose the highest transaction value of the cooperating exporter in its home market and the lowest transaction value of all exports to India, from the subject country, has been adopted and level of trade adjustments have been applied on these transaction values, on facts available basis, to arrive at the dumping margin as follows:

| US\$/MT        |       |
|----------------|-------|
| Normal value   | ***** |
| Export Price   | ***** |
| CIF            | ***** |
| Adjustments    | ***** |
| Net Ex-work EP | ***** |
| Dumping Margin | ***** |
| DM %           | 38%   |

#### G.4.2 USA

55. As per the DGCIS data there was no export of the subject goods from USA during the POI. However, in a parallel investigation against Chinese Taipei, the cooperating exporter from that country has provided information that substantial quantity (\*\*\*\*\* MT) of the subject goods have been imported by them from USA and re-exported to India. In this connection reference is invited to Article 2.5 of the Agreement, which reads as follows:

*"In the case where products are not imported directly from the country of origin but are exported to the importing member from an intermediate country, the price at which the products are sold from the country of export to the importing member shall normally be compared with the comparable price in the country of export. However, comparison may be made with the price in the country of origin, if, for example, the products are merely transshipped through the country of export, or such products are not produced in the country of export, or there is no comparable price for them in the country of export".*

56. The responding exporter in the parallel investigation has informed that the subject goods were imported from USA and Korea RP during the POI and exported to India. However, US market price is not available due to complete non-cooperation from that country. Therefore, for the purpose of determination of Normal value in USA the normal value has been constructed on facts available basis. Accordingly, the constructed normal value in USA works out to US\$\*\*\*\*\* per MT.

57. The weighted average CIF export price of Sodium Cyanide originating in the USA, but exported through Taipei to India, as per Taiwanese exporters data is US\$\*\*\*\*\*/MT. Since the goods have been imported to Taipei first then exported to India, adjustments towards inland freight and insurance, ocean freight and insurance, commission and other handling charges at both stages of transactions have been made to this price to arrive at the estimated weighted average ex-works net export

price from USA. Accordingly the ex-works export price and dumping margin for the US exporters works out as follows:

|                | US\$/MT |
|----------------|---------|
| CIF            | *****   |
| Adjustments    | *****   |
| Commission     | *****   |
| Net Ex-work EP | *****   |
| Normal value   | *****   |
| Dumping Margin | *****   |
| DM %           | 79%     |

#### G.4.3 The European Union

58. The domestic industry in its post disclosure submission has pointed out that certain transactions of Potassium Cyanide imported from the EU have been captured in the DGCIS transaction-wise data and thereby the CIF value and landed value of imports from EU has been inflated. Examination of the transaction level data of DGCIS shows that few transactions of Potassium Cyanide with higher per unit realization has been captured in the data. The data has been rectified accordingly and the details work out as under:

|    | Total Qty MT | Total Value Rs | CIF Price Rs/MT | Landed Value Rs/MT |
|----|--------------|----------------|-----------------|--------------------|
| EU | 105.40       | 6501868        | 61687           | 77880              |

59. Accordingly, the Dumping Margin Calculation has been revised for the EU exporters on the basis of DGCIS data and adjustments on the basis of facts available as follows:

| US\$/ MT       |          |
|----------------|----------|
| CIF            | 1332.325 |
| Adjustments    | 154.52   |
| Commission     | 39.97    |
| Net Ex-work EP | 1137.83  |
| Normal Value   | 1124     |
| Dumping Margin | -13.83   |
| DM %           | -1%      |

The dumping margin in respect of EU exporters has been determined to be negative.

#### G.5 Dumping Margin Table

|                | TSPC&HWC | Others from Korea RP | USA   | EU    |
|----------------|----------|----------------------|-------|-------|
| Normal Value   | *****    | *****                | ***** | ***** |
| Export Price   | *****    | *****                | ***** | ***** |
| Dumping Margin | *****    | *****                | ***** | NIL   |
| %              | 3.71%    | 38%                  | 79%   |       |

## **G.6 Likelihood of Continuation or Recurrence of Dumping**

60. The domestic industry has argued that current state of dumping is not the only criteria for determination of the need for continued imposition of duty in a sunset review investigation. The requirement under the Agreement is to examine the likelihood of dumping to continue or recur in the event of withdrawal of duty. Having examined the current scenario of dumping of the subject goods from the subject countries during the POI, the Authority has also examined the likelihood of continuation or recurrence of dumping, if the duty against the subject countries is removed.

61. The examination of current dumping indicates that dumping continues from Korea RP. The capacity of TSPC is about \*\*\*\*\* MT per year whereas the production is about \*\*\*\*\* MT. Therefore, it has a significant spare capacity and trade volume of this exporter to India has increased significantly during the injury investigation period. Therefore, there is likelihood that dumping would continue from this country.

62. As far as European Union is concerned, the Authority notes that there is very small export volumes from that territory during the POI. One of the exporters from the EU, in its brief submission, has argued that their exports are of higher purity and do not directly compete with the domestic industry's products in the Indian market. It is also noted that price at which the goods have been exported from the EU was much above the reference price fixed. Therefore, looking at the volume and price of the export from the EU it appears that there is no imminent likelihood of dumping to recur from the EU if the duty is removed.

63. As far as USA is concerned, the Authority notes that there is no direct export of the subject goods from USA during the POI except for a very small quantity exported in 2001-02. However, the Authority also notes that substantial quantity of the subject goods originating in the USA has entered the Indian market through Chinese Taipei during the POI at dumped prices. Therefore, the Authority holds that there is a likelihood of dumping recurring directly from the USA in the event of revocation of the duty against the said country.

64. In summary, the above examination indicates that while dumping continues from Korea RP and the USA, and likelihood of continuation of such dumping exists, there is no current dumping from the European Union and imminent likelihood of recurrence of dumping from that country does not exist.

## **H. INJURY DETERMINATION**

65. The Authority has examined the injury, if any, suffered by the domestic industry and the causal link between the dumped imports and injury suffered. The Authority has also examined the likelihood of recurrence of dumping and injury. For the purpose of the injury examination the petitioner accounts for a major proportion of total domestic production, therefore, constitutes the domestic industry within the meaning of the Rule 2B.

## **H.1 Continuation of Injury: Examination of Injury Parameters and Causal Links**

### **H.1.1 Views of interested parties**

66. The domestic industry has pleaded that the injury to the domestic industry continues in spite of the protection of antidumping duty available to them due to continuation of dumped imports from many sources.

Importers, exporters and other interested parties have argued that the domestic industry has improved its performance and suffers no injury at the moment and injury if any is due to their own inefficiencies and therefore, cannot be attributed to the imports from these sources.

### **H.1.2 Examination by the Authority**

67. The Authority has taken note of various arguments raised by various parties in their submissions and issue of likelihood of recurrence of dumping and injury to the domestic industry has been examined in the light of these arguments made before the Authority.

68. The Authority notes that this is a sunset review of the measure already in force and examined the issue of cumulative assessment of injury to the domestic industry on account of simultaneous dumping from the subject countries, in terms of Annexure II (iii) of the Antidumping Rules and holds that the conditions specified in the said Rules are satisfied in this case for cumulative assessment. The Authority also notes that a simultaneous investigation is in progress against import of the subject goods from Chinese Taipei. However, for the purpose of this investigation the imports from all other sources have been examined for causal link analysis.

69. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

70. For the purpose of injury analysis the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

71. Since positive dumping margin has been established for the exports from the Korea RP and USA, entire exports from those countries has been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal links examination. Imports from the European Union are at un-dumped prices and therefore, have not been included in the dumped imports category.

### H.1.3 VOLUME EFFECT:

#### Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

72. The effects of the volume of dumped imports from the subject country as well as imports from other countries have been examined as follows:

#### i) Import Volumes and share of subject countries:

For the purpose of volume analysis the Authority examined the DGCIS import data for the relevant periods. However, it is noticed that the volume of exports indicated by the cooperating exporters in their responses in parallel investigations are higher than the volume of imports reported by DGCIS. Therefore, the volume of import has been adjusted taking in to account the export data available with the Authority. Accordingly, the volume of dumped imports of the product under consideration has been estimated as follows:

Qty in MT

|   | 2000-01  | 2001-02  | 2002-03  | POI<br>April-Dec<br>03 | 2003-04 |
|---|----------|----------|----------|------------------------|---------|
| Korea RP                                      | 1113.435 | 1437.149 | 1445.635 | 1700                   | 2267    |
| Trend   | 100      | 129.07   | 129.84   | 152.68                 | 203.57  |
| EU  | 385.888  | 157.9    | 221.486  | 105.4                  | 135.3   |
| USA   | 0        | 0        | 17.8     | 0                      | 0       |
| Total Subject<br>Countries                    | 1499.323 | 1595.049 | 1684.921 | 1805.4                 | 2401.97 |
| Trend   | 100      | 108.38   | 112.38   | 120.41                 | 160.20  |
| Chinese Taipei**                              | 27       | 18       | 107      | 372.25                 | 539.6   |
| Total Imports<br>Others (including<br>Taipei) | 45.15    | 40.325   | 330.384  | 441.91                 | 603.01  |
| Trend   | 100      | 89.31    | 731.75   | 978.76                 | 1335.57 |
| Total Dumped<br>imports                       | 1499.32  | 1595.05  | 1684.92  | 1805.40                | 2401.97 |
| Trend   | 100      | 106.38   | 112.38   | 120.41                 | 160.20  |
| Total import                                  | 1544.473 | 1635.374 | 2015.305 | 2247.31                | 3004.98 |
| Trend   | 100      | 105.89   | 130.48   | 145.51                 | 194.56  |

\*\* Chinese Taipei exports of the POI include export of \*\*\*\*\* MT of Sodium Cyanide of US origin and \*\*\*\*\*MT of Sodium Cyanide of Korean Origin.

The above data indicates that import from Korea has increased by 53% in the POI and over 100% on annualized basis compared to the base year, whereas import from the subject countries has increased by about 22% and 60% during the same period. Import from the EU and USA has declined substantially though total import has increased by about 46% and 94% during the same period.

ii) **Demand, Output and Market shares**

a) **Production of the Domestic Industry**

|                      |  | Quantity in MT |         |         |       |                |
|----------------------|--|----------------|---------|---------|-------|----------------|
|                      |  | 2000-01        | 2001-02 | 2002-03 | POI   | POI Annualized |
| Capacity             |  | *****          | *****   | *****   | ***** | *****          |
| Output               |  | *****          | *****   | *****   | ***** | *****          |
| Indexed              |  | 100.00         | 79.32   | 96.77   | 83.58 | 83.58          |
| Capacity Utilization |  | *****          | *****   | *****   | ***** | *****          |
| Indexed              |  | 100            | 79      | 96      | 83    | 83             |

The above data indicates that the production and capacity utilization of the domestic industry has declined significantly after showing an improvement in the year 2002-03. The decline in production and capacity utilization, in spite of antidumping duty protection against the subject countries, is significant and material.

The Authority also examined the production with reference to the demand in the domestic market and the ability of the domestic industry to sell in the domestic market, which is shown below.

b) **Sales of Domestic Industry**

|                   |  | Quantity in MT |         |         |        |                |
|-------------------|--|----------------|---------|---------|--------|----------------|
|                   |  | 2000-01        | 2001-02 | 2002-03 | POI    | POI Annualized |
| Sales (Domestic)  |  | *****          | *****   | *****   | *****  | *****          |
| Trend             |  | 100.00         | 109.47  | 107.24  | 110.05 | 110.04         |
| Sales – (Exports) |  | *****          | *****   | *****   | *****  | *****          |
| Trend             |  | 100.00         | 175.15  | 224.85  | 277.17 | 277.17         |
| Sales - Total     |  | *****          | *****   | *****   | *****  | *****          |
| Trend             |  | 100.00         | 116.95  | 120.63  | 129.06 | 129.06         |

The data above shows that though the production declined by 26%, the domestic sales has increased by 10% whereas major increase in the sales is in the export segment, which increased by 177%. The domestic industry has argued that unremunerative price in the domestic market, due to dumped imports, has forced them to increase the exports.

**c) Demand and Market Share****Quantity in MT**

|                                   | 2000-01  | 2001-02  | 2002-03  | POI April-Dec 03 | 2003-04 |
|-----------------------------------|----------|----------|----------|------------------|---------|
| Total import                      | 1544.473 | 1635.374 | 2015.305 | 2247.31          | 3004.98 |
| Trend                             | 100      | 105.89   | 130.48   | 145.51           | 194.56  |
| Domestic Industry sales           | *****    | *****    | *****    | *****            | *****   |
| Trend                             | 100      | 109.47   | 107.24   | 82.54            | 110.04  |
| Sales by other domestic producers | *****    | *****    | *****    | *****            | *****   |
| Trend                             | 100      | 68.84    | 107.62   | 92.53            | 123.39  |
| Total Domestic Demand             | 7407.47  | 7237.37  | 8310.30  | 7287.39          | 9724.97 |
| Trend                             | 100      | 97.70    | 112.19   | 98.38            | 131.29  |
| Share on Demand                   |          |          |          |                  |         |
| Domestic Industry                 | *****    | *****    | *****    | *****            | *****   |
| Trend                             | 100      | 112.04   | 95.59    | 83.90            | 83.82   |
| Other Domestic Producers          | *****    | *****    | *****    | *****            | *****   |
| Trend                             | 100      | 70.46    | 95.92    | 94.06            | 93.99   |
| Korea RP                          | 15.03%   | 19.86%   | 17.40%   | 23.33%           | 23.31%  |
| Trend                             | 100      | 132.11   | 115.73   | 155.20           | 155.06  |
| EU                                | 5.21%    | 2.18%    | 2.67%    | 1.45%            | 1.39%   |
| Trend                             | 100      | 41.88    | 51.16    | 27.76            | 26.71   |
| USA                               | 0.00%    | 0.00%    | 0.21%    | 0.00%            | 0.00%   |
| Subject countries                 | 20.24%   | 22.04%   | 20.28%   | 24.77%           | 24.70%  |
| Trend                             | 100      | 108.88   | 100.17   | 122.40           | 122.03  |
| Others                            | 0.61%    | 0.56%    | 3.98%    | 6.06%            | 6.20%   |
| Trend                             | 100      | 91.41    | 652.25   | 994.90           | 1017.30 |

It is noted that domestic demand of the product under consideration has increased by about 31% compared to the base year on a year-to-year analysis. However, the share of domestic industry in the total domestic demand has shown declining trend, whereas the share of subject countries has remained significantly high and increased by 4% during the corresponding period, even after imposition of duty. The share of dumped imports from Korea RP has significantly increased even after imposition of duty against that country and share of other two countries against duty is in force has, either significantly declined, or completely reduced to zero. The share of the other domestic producer has also reduced marginally compared to the base year.

**H.1.4 Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry**

73. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from subject countries has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression.

74. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of

the Domestic industry (worked out after normating the costing information of the Domestic Industry) have been compared with the landed cost of imports from the subject countries.

(i) **Price undercutting and underselling effects**

Values in Rs/MT

| Rs./KG   | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | POI       |
|--|---------|---------|---------|-----------|
| <b>Cost to make and sale</b>                   | *****   | *****   | *****   | *****     |
| Trend  | 100     | 102.51  | 87.94   | 100.17    |
| <b>Selling Price</b>                           | *****   | *****   | *****   | *****     |
| Trend  | 100     | 94.72   | 91.91   | 86.85     |
| <b>Landed Value (without antidumping duty)</b> |         |         |         |           |
| Korea RP                                       | 67317   | 63225   | 66429   | 55642     |
| EU   | 102941  | 167493  | 80120   | 77880     |
| USA  | 0       | 0       | 60166   | 49744     |
| <b>Price Undercutting</b>                      |         |         |         |           |
| Korea RP                                       |         |         |         | 0 to 10%  |
| EU   |         |         |         | NIL       |
| USA  |         |         |         | 10 to 20% |
| NIP  |         |         |         | *****     |
| <b>Price Underselling</b>                      |         |         |         |           |
| Korea RP                                       |         |         |         | 5 to 15%  |
| EU   |         |         |         | Negative  |
| USA  |         |         |         | 10 to 20% |

The selling price (net sales realization) of the domestic industry shows significant decline, whereas cost of production of the domestic industry has increased in the POI after a significant decline in the year 2002-03. Price undercutting has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from the subject countries over the entire period of investigation with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the DGCI&S transaction wise data of import prices from the subject countries.

The price undercutting (without considering the antidumping duty in force) is positive. It is also noted that as far as Korea RP is concerned major portion of the exports are from M/s Tong Shuh and M/s Hanwah, which did not attract antidumping duty. Therefore, the dumped import from this country is found to have significant price undercutting effect on the domestic prices. As far as the European Union is concerned, the landed value of the subject goods imported from that country is much above the prices of the domestic industry indicating no price undercutting or underselling effects.

As far as USA is concerned, though there is no direct import of the subject goods from that country, considering the fact that the goods are being exported through Chinese Taipei, the landed value of the goods from that country has been



compared for the purpose of price under cutting and under selling determination. These exports are found to have significant price underselling effect.

## (ii) Price suppression and depression effects of the dumped imports:

The price suppression effect of the dumped imports has also been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject countries.

The above table shows that the landed values of goods from Korea and USA have significantly declined compared to the base year. The cost of production of the subject goods shows substantial increase compared to the base year. But the selling price shows decline during the corresponding period.

### H.1.5 Examination of other Injury Parameters

75. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern, with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analysed as follows:

#### i) Productivity

| Rs./KG                    | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | POI – Annualized |
|---------------------------|---------|---------|---------|------------------|
| Productivity per day      | *****   | *****   | *****   | *****            |
| Trend                     | 100     | 79.32   | 96.77   | 83.57            |
| Productivity per Employee | *****   | *****   | *****   | *****            |
| Trend                     | 100     | 80.50   | 101.74  | 89.70            |

Productivity of the domestic industry, measured in terms of its labour productivity i.e. the output, has declined due to decline in total production during the POI.

#### ii) Profits and actual and potential effects on the cash flow

The Authority examined the cost of production of the domestic industry on the basis of their cost records for the product involved and the major raw material i.e. HCN produced from the synthetic processing route. The sales realization was also examined from their sales records. The Authority notes that the interested parties have argued that the domestic industry has significant quantities of sales of second quality material and therefore, there actual sales realization would be much higher compared to their claim. This aspect was also examined from the sales records of the company and it was noticed that about \*\*\*\*\*MT (\*\*\*\*%) of second quality material was sold by the Company during the POI to some specific customers. The applicant clarified that the sales are as per specific requirements of certain customers. However, the SQ material sold is alike in all essential characteristics to

the product under consideration. Therefore, the cost of production, as well as net sales realization, has been worked out on average basis.

| Rs/MT |                    | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | POI Annualized |
|-------|--------------------|---------|---------|---------|----------------|
|       | Cost of Production | *****   | *****   | *****   | *****          |
|       | Trend              | 100     | 104.75  | 89.13   | 102.34         |
|       | Selling Price      | *****   | *****   | *****   | *****          |
|       | Trend              | 100     | 95.92   | 92.79   | 88.01          |
|       | Profit/Loss        | *****   | *****   | *****   | *****          |
|       | Trend              | 100     | 95.92   | 92.79   | 88.01          |

It is noted that the cost of production of the domestic industry has shown an upward trend after a significant decline in the year 2002-03. However, the sales realization of the domestic industry has been steadily declining, resulting in decline in the profit margin of the domestic industry though the industry continued to earn profit on its domestic operation during the POI. The profit margin has declined by over 65% compared to the base year.

### iii) Employment and wages

The employment level of the domestic industry has declined. But the expenses on account of salary and wages have increased by about 14%. However, increase in the expenses towards salary and wage is in tandem with prevailing rules and regulations in the country during the comparable periods.

| Rs./KG |            | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | POI Annualized |
|--------|------------|---------|---------|---------|----------------|
|        | Employment | *****   | *****   | *****   | *****          |
|        | Trend      | 100.00  | 98.54   | 95.12   | 93.17          |
|        | Wages      | *****   | *****   | *****   | *****          |
|        | Trend      | 100.00  | 93.58   | 107.20  | 114.35         |

### iv) Return on investment and ability to raise capital

The return on capital employed by the domestic industry shows deterioration compared to the base year and previous years.

| Rs./MT |                                    | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | POI Annualized |
|--------|------------------------------------|---------|---------|---------|----------------|
|        | PBIT                               | *****   | *****   | *****   | *****          |
|        | Capital Employed on domestic sales | *****   | *****   | *****   | *****          |
|        | Return on Capital Employed         | 36.68%  | 19.60%  | 29.97%  | 9.93%          |
|        | Trend                              | 100     | 53.45   | 81.7    | 27.07          |

It is evident from the above that return on capital employed of the domestic industry significantly deteriorated.

**v) Investment**

There has been no capacity addition or any fresh investment by the applicants during the investigation period.

**vi) Magnitude of Dumping**

Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the dumped imports can injure the domestic industry shows that the dumping margin determined against Korea RP and USA, is substantial for the POI, even when the antidumping duty is in force.

**vii) Factors affecting prices**

Change in cost structure, competition in the domestic market and prices of other sources have been examined for analyzing the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market. There is no viable substitute to this product. M/s Cyanide & Chemicals is the largest producer of the subject good in India. M/s Gujarat Alkalies and Chemicals Ltd. is the other producer of the subject goods in India. The interested parties have argued that the prices of the petitioner is affected by the price of GACL, whose cost of production is much less compared to the cost of the petitioner, in view of the fact that GACL uses HCN produced and supplied by IPCL from its ACN plant as a by-product. The Authority notes that GACL has also supported the petition and has submitted that they have not been able to realize a fair price due to dumped imports of the subject goods. However, the capacity of GACL is limited and the petitioner has argued that there is a fair competition between them in the domestic market.

**viii) Inventories**

| Rs./KG                    | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | POI<br>Annualized |
|---------------------------|---------|---------|---------|-------------------|
| Inventories               | *****   | *****   | *****   | *****             |
| Inventories as % of Sales | 46.86   | 25.12   | 27.37   | 11.93             |

The data shows that the domestic industry has been able to liquidate inventories after imposition of Anti Dumping Duty.

**H.2 Other Known factors and Causal Link**

76. The following facts have been placed before the Authority for non-attribution analysis.

**i) Volume and prices of imports from other sources**

During the POI, other than subject countries, significant imports have taken place from Chinese Taipei. However, imports from Chinese Taipei are under investigation by the Authority. The Authority also notes that the imports from this country actually originate in the countries being investigated in this review investigation. Imports

from countries other than Taiwan and subject countries are either small in quantity or prices are higher. The Authority notes that dumped imports from subject countries constitute about 80% of total imports and imports from all other sources account for remaining 20%. Of the 20% Chinese Taipei constitutes about 90% of the imports. Since the exports from Chinese Taipei actually originates in the subject countries, the subject countries actually accounted for 98% of total imports.

**ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption**

Total domestic demand of the product under consideration, has increased significantly by about 29% on annualized basis compared to the base year. However, the share of domestic industry in the demand, after increasing in 2001-02 (after imposition of the duty), has shown sharp declining trend, whereas the share of subject countries has remained significant even after imposition of duty. There is no significant change in consumption pattern of the product in the domestic market, which can be attributed to the injury to the domestic industry.

**iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. As mentioned earlier, only other producer of the subject goods in India appears to offer a healthy competition to the petitioner in the Indian market. Major portion of the imports of the subject goods takes place from subject countries. Other exporting countries do not have substantial market share in Indian market to effectively compete.

**iv) Development of technology and export performance**

The Authority notes that the production process of Sodium Cyanide is similar in all producing countries. However, the process of production of the basic raw material i.e. HCN is different. While the ACN production facilities produce HCN as a by product of the ACN plant, HCN is also widely produced through basic inorganic synthetic route as a viable production process. However, the cost structures of production from these two routes differ significantly. Though the technology is different for obtaining the basic raw material they are viable production processes and are widely used world over.

The export performance of the domestic industry in volume terms was found to be better than its domestic performance during the injury investigation period. However, profit/loss of the domestic industry on account of their export performance has been segregated and the performance of the domestic industry, in terms of its domestic operation only, has been analysed. Therefore, injury if any, on account of the export performance of the domestic industry, has not been attributed to the dumped imports.

The above analysis of injury parameters and examination of non-attribution factors indicate that no other factor, other than dumped imports has caused any injury to the domestic industry.

### H.3 Conclusion on Injury and Causal Link

77. The foregoing examination of the injury parameters and the volume and price effects of dumped imports indicate that though the sales of the domestic industry has increased by about 10% compared to the base year, there is a significant drop in production and capacity utilization. In fact the sales have been augmented by liquidation of huge stock of the product in the base year, after imposition of duty in the original investigation, rather than through improvement in production volume. The examination indicates that the domestic industry suffers injury in terms of significant fall in production, capacity utilization, productivity, profitability and return on investments. The domestic prices have been affected by the volume and price effects of the dumped imports from the subject countries, excluding the European Union, and import prices from these countries have significant price undercutting, underselling and price depression effect on the domestic prices.

### H.4 LIKELIHOOD OF CONTINUATION OR RECURRENCE OF DUMPING AND INJURY

78. The following facts have been brought before the Authority for examination of likelihood of continuation or recurrence of injury to the domestic industry. The domestic industry has pleaded that in a sunset review the Authority is required to examine the likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury to arrive at a decision to continue or vary or remove the duty so as to offset dumping. The domestic industry in its submission has quoted the law and practices and standards of reviews in several countries to highlight the fact that determination of likelihood of 'continuation or recurrence of dumping and injury' is vital in an expiry review investigation.

79. The domestic industry has *inter alia* submitted:

1. That the producers from subject countries are dumping the material in the Indian market.
2. That Domestic industry is suffering continued injury due to dumped import from subject countries and should the Anti Dumping Duty be revoked, the injury to the domestic industry would recur or intensify.
3. That export price and landed price of imports from subject countries has declined after imposition of Anti Dumping Duty;
4. That Volume of imports from Korea RP has increased in spite of the antidumping duty against exports from that country, except one exporter.
5. That there is increase in the cost of production. However, the exporters have reduced their export price to India;
6. There is decline in selling price of the domestic industry. The price at which domestic industry is selling material is not a remunerative price.
7. That the producers are holding significant surplus capacities and their domestic demand is significantly below the capacities created by them.

80. As far as Korea is concerned, the Authority notes that there are two major producers of the subject goods in that country out of which one was not found to be dumping in the original investigation period and therefore, did not attract any duty. The same exporter has also fully cooperated in the current investigation and the dumping margin in the current investigation period has been found to be positive and above the de minimis level. The other exporter seems to have routed its material through Chinese Taipei as per the information available with the Authority. The Korean producers also have significantly high-unutilized capacities and limited domestic demand. The Korean exports to India have been found to significantly undercut the domestic selling price in India. There is no indication or valid argument that the price structure of imports from the subject country will change once the duty is revoked. Therefore, considering the extent of dumping margin and the volume of current imports, it appears that dumping will continue from Korea RP, if the duties are withdrawn and the domestic industry will continue to suffer material injury on account of such dumped imports.

81. As far as the European Union is concerned, the Authority notes that the volume of imports from the EU has remained low during the injury period and the average landed value of imports during the said period is much above the domestic selling prices of the domestic industry, as well as the reference price fixed by the Authority in the original investigation. Therefore, the exports from the EU did not have any adverse effect on the domestic industry and considering the volume and prices of the exports from that country it appears that there is no likelihood of dumping recurring from the EU and injury being caused to the domestic industry on account of such imports.

82. The Authority notes that though there was no direct export of the subject goods from the USA, a significant quantity of goods manufactured in the USA has been exported through Chinese Taipei at dumped prices. The landed value of the goods exported from USA to India through the third country has been found to have significant price undercutting and underselling effect on the domestic prices. The data on US production capacity and volume of trade of the product indicates that there is a significant capacity available in that country to enable the exporters to dump the goods in India once the duty is revoked. Therefore, the Authority is of the view that dumping would recur from the USA if the duty is revoked and the domestic industry would suffer material injury on account of such imports.

#### **H.5 Determination of Non-injurious Price and injury margin**

83. Non-injurious Price for the subject goods has been worked out by the costing division after a detailed analysis and scrutiny of information provided by the domestic industry. Weighted average Non-injurious price for the domestic industry has been determined by the Authority as Rs\*\*\*\*\*/-per MT

84. The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exports from the subject countries and the injury margins have been found to be significant against USA and Korea RP and negative in case of the European Union.

## I. CONCLUSIONS

85. Considering the submissions of the interested parties and other facts available with the Authority the Authority concludes that

- i) The subject goods continue to be dumped from the Korea RP and USA, and dumping margins of the subject goods imported from these countries are significant and above de minimis;
- ii) There is no likelihood of dumping to continue and/or recur from the European Union, if the duties are revoked. However, dumping is likely to continue from the Korea RP and USA if the duties are revoked.
- iii) The domestic industry continues to suffer material injury on account of the dumped imports from Korea RP and USA.
- iv) Injury to domestic industry is likely to continue or recur if the duties are revoked in respect of imports from Korea RP and USA. However, injury to the domestic industry is not likely to recur if the duties are revoked in respect of imports from the European Union;

## J. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

86. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

## K. RECOMMENDATIONS

87. Having concluded that there is no likelihood of continuation of dumping and injury on account of imports from the European Union, the Authority finds no justification for continuation of the duty against these countries/territories and therefore, recommends revocation of duty in force against the European Union.

88. However, in view of positive determination of likelihood of dumping and injury on account of imports from Korea RP and the USA, the Authority is of the opinion that continuation of the measure is required against imports from these countries. Considering the current level of dumping from that country and injury suffered by the domestic industry, the Authority is of the opinion that the measure in force needs to be revised. Therefore, Authority considers it necessary and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods from Korea RP and USA in the form and manner described hereunder.

89. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping or margin of injury whichever is lesser, so as to remove the injury to the domestic industry. Considering that the price of raw materials and the finished products have significantly changed the Authority considers it necessary to impose

duty on fixed duty basis and recommends continuation of definitive antidumping duty on all imports of subject goods originating in or exported from Korea RP and USA, as indicated in Col 9 of the table below

**Duty Table**

| Sl. No | Sub Heading or Tariff Item | Description of Goods | Specification | Country of origin | Country of Export | Producer                                 | Exporter               | Duty Amount | Unit of Measure | Currency |
|--------|----------------------------|----------------------|---------------|-------------------|-------------------|--|------------------------|-------------|-----------------|----------|
| (1)    | (2)                        | (3)                  | (4)           | (5)               | (6)               | (7)                                      | (8)                    | (9)         |                 |          |
| 1      | 283711                     | Sodium Cyanide       | Any           | Korea RP          | Any               | M/s Tong Shuh Petrochemicals Corporation | M/s Hanwah Corporation | 29.62       | MT              | US\$     |
| 2      | 283711                     | Sodium Cyanide       | Any           | Korea RP          | Any Except USA    | Any other than above                     | Any other than above   | 250.88      | MT              | US\$     |
| 3      | 283711                     | Sodium Cyanide       | Any           | Any Except USA    | Korea RP          | Any                                      | Any                    | 250.88      | MT              | US\$     |
| 4      | 283711                     | Sodium Cyanide       | Any           | USA               | Any               | Any                                      | Any                    | 268.27      | MT              | US\$     |
| 5      | 283711                     | Sodium Cyanide       | Any           | Any               | USA               | Any                                      | Any                    | 268.27      | MT              | US\$     |

**L. Further Procedures**

90. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

91. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party, as per the time schedule stipulated for this purpose.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority